₹15/-

★ वर्ष 43 ★ अंक 6 ★ जून 2016

हँसती दुनिया

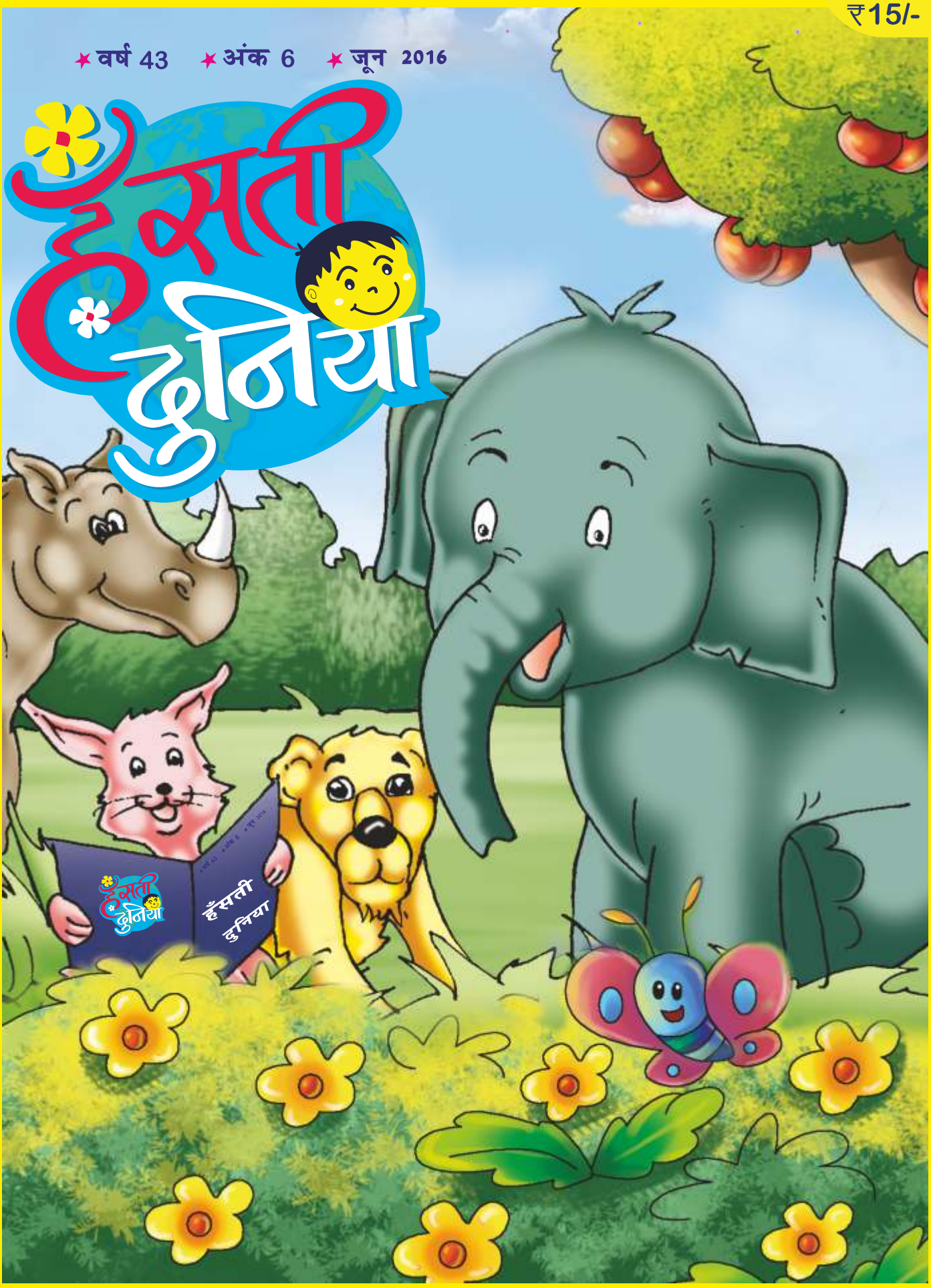

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 6 ● जून 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4 सबसे पहले
5 सम्पूर्ण अवतार बाणी
6 अनमोल वचन
11 समाचार
20 वर्ग पहेली
44 पढ़ो और हँसो
46 जन्मदिन मुबारक
48 रंग भरो परिणाम

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

7. कर्मभूमि की श्रेष्ठता
: राधेलाल 'नवचक्र'

8. पितृ–भक्त बालक
: प्रतीक्षा कुशवाहा

10. पेड़ की उदारता
: कमल सोगानी

16. निश्चय
: फारुख हुसैन

19. लिंकन का दृढ़ संकल्प
: नेहा नागपाल

22. दयालु न्यूटन
: दिनेश दर्पण

29. बुरी आदतों का परिणाम
: राजकुमार जैन 'राजन'

38. बलिदान
: किशोर डैनियल

40. जीवन चलने का नाम
: शिखा ग्रोवर

41. गौरव से जियो
: श्यामसुन्दर गर्ग

42. नकल का मजा
: डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

43. अपना–अपना नजरिया
: अर्चना सोगानी

विशेष / लेख

18. ग्रेट वाल ऑफ चाइना
: डॉ. विनोद गुप्ता

23. सीमेण्ट की जन्मकथा
: दिनेश दर्पण

24. जिसे देखकर वनराज....
: जयेन्द्र

25. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डी लाल अग्रवाल

26. क्या आपको ज्ञात है?
: उदय ठाकुर

33. अनोखे जीव
: जयेन्द्र

कविताएं

9. बाल–सुरक्षा
: डॉ परशुराम शुक्ल

21. पंछी की व्यथा
: रूपनारायण काबरा

28. तितलियों
: रेनू भटनागर

39. चूहों की पाठशाला, पाठ पढ़ाओ चिड़िया
: राजेन्द्र निशेश

47. चार बाल कविताएं
: डॉ. दिनेश चमोला

सबसे पहले

शक्ति एवं क्षमता

दो मित्र आपस में बात कर रहे थे। एक शरीर से स्वस्थ और ताकतवर था और दूसरा सामान्य। ताकतवर लड़के का नाम उसकी ताकत के अनुरूप ही था– शक्ति। दूसरे का नाम भी उसके गुणों के अनुरूप था– सक्षम। जो ताकतवर था वह अपनी बड़ाई करता जा रहा था। मेरे से सभी डर कर रहते हैं। हर कोई मेरी बात को मानता है। दूसरा चुपचाप सुन रहा था और उसका चुप रहना कहने वाले की हर बात का समर्थन समझा जा रहा था। दोनों अपनी कक्षा में पहुँच चुके थे। अध्यापक के आने पर सभी ने अभिवादन किया और पढ़ाई में व्यस्त हो गये।

अध्यापक ने कक्षा में कुछ प्रश्न किए। जिनके उत्तर सक्षम ही दे सका और शक्ति चुपचाप बैठा सुन रहा था। अध्यापक ने शक्ति से भी कुछ प्रश्न पूछे परन्तु वह कुछ नहीं कह सका। इस पर अध्यापक ने कहा– 'शक्ति तुम्हें सक्षम से कुछ सीखना चाहिए।' आवेश में शक्ति कुछ शब्द अध्यापक को कहने ही जा रहा था कि अध्यापक ने सक्षम को भी यही बात कही कि सक्षम तुम्हें भी शक्ति से कुछ सीखना चाहिए। अब शक्ति एवं सक्षम दोनों को अध्यापक की बातों ने उत्सुक कर दिया कि हम एक–दूसरे से क्या सीख सकते हैं।

साथियों, हमें भी अवश्य विचार करना होगा कि हमें अपनी शक्ति एवं क्षमता का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। शक्ति का अर्थ है ताकत। ताकत केवल शरीर तक सीमित हो तो उसे केवल शारीरिक बल कह सकते हैं परन्तु अगर ताकत मन को स्वस्थ करने के लिए हो तो वह तप बन जाती है। इसी तरह सक्षम या क्षमता का अर्थ होता है– योग्यता, कार्य को करने की कुशलता।

शरीर की ताकत बढ़ाने के लिए हम अच्छा भोजन करते हैं, व्यायाम करते हैं और कभी अस्वस्थ हों तो दवा का उपयोग भी करते हैं। इसके साथ–साथ हम भोजन करते हैं जो हमारे शरीर की प्रवृत्ति के अनुरूप हो अर्थात् वह भोजन हमारे ग्रहण करने योग्य होना चाहिए।

इसी तरह हमें अपने शरीर के साथ–साथ मन को भी शक्ति देनी होगी और योग्य बनाना होगा। मन हर परिस्थिति में अपने मूल स्रोत से ही जुड़ा रहे मन की प्रवृत्ति है कि इधर–उधर भागता भी रहता है एवं 'आत्म–स्थिति' में भी रह सकता है।

मन की बात मानने से पूर्व मुझे यह अवश्य जानना है कि मैं जो कर रहा हूँ, क्या वह मेरे और मेरे अच्छे संस्कारों के साथ मेल खाता भी है। सजगता और सावधानी से हर कर्म को करने से पूर्व यह जानना होगा, मेरा कार्य वही हो जो मेरे लिए एवं मानवता के लिए उचित हो। इस तरह सोचने की हमारी आदत नहीं पड़ी है इसलिए शुरू–शुरू में थोड़ा मुश्किल अवश्य लगेगा परन्तु धीरे–धीरे अभ्यास से हम जल्द ही आन्तरिक शक्ति, क्षमता एवं योग्यता को अनुभव कर पाएंगे। फिर परिस्थितियां आती और जाती रहेंगी और हम अपनी स्थिति अर्थात् 'आत्म–स्थित' हो जाएंगे। इसलिए शक्ति एवं क्षमता का समन्वय ही हम सभी में होना चाहिए।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 133

सोहणा रूप जवानी वी ए धन दौलत दा नहीं शुमार।
जिधर जावे होण सलामां हर पासे होवे सत्कार।
नौकर चाकर होण बथेरे हत्थीं करनी पवे न कार।
पलंग नवारी सुन्दर सेजा सौंदा होवे पैर पसार।
पुन्न दान वी रज के कर लए जस वी फैले विच संसार।
कहे अवतार जे रब नहीं जाता उस बन्दे नूं है धृगकार।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार में मानव की शोभा केवल उसके विभिन्न गुणों अथवा उसकी सांसारिक उपलब्धियों के कारण नहीं होती। संसार में आकर अगर इन्सान ने सद्गुरु की कृपा द्वारा परमात्मा को अंग–संग नहीं जाना तो उसकी सुन्दरता, जवानी और बेशुमार धन–दौलत का कोई लाभ नहीं। भले ही वह जिधर भी जाए उसे लोग नमस्कार कर रहे हों, हर तरफ उसका सत्कार हो रहा हो उसके पास बहुत से नौकर–चाकर भी हों और उसे हाथ से कोई काम न करना पड़ता हो फिर भी प्रभु की प्राप्ति के बिना उसका जीवन धिक्कार योग्य है।

भले ही उसके पास हर प्रकार की सुख–सुविधाएं हों और वह आरामदायक पलंग पर पैर पसारकर सोता हो, भले ही वह खूब पुण्य–दान करता हो और संसार में दूर–दूर तक उसकी यश–कीर्ति फैल रही हो, यह सब कुछ होते हुए भी अगर उसने परमात्मा को नहीं जाना, सद्गुरु की शरण में जाकर उसने इस अंग–संग रमे–राम की पहचान नहीं की तो ऐसे मानव को प्रशंसा मिलनी तो दूर उसे धृगाकार ही मिलती है। तमाम उपलब्धियों के बावजूद उसका जीवन व्यर्थ चला जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि मानव तू बेशक संसार की हर उपलब्धि हासिल कर लेकिन अपने जीवन को सफल करने के लिए तू समय रहते प्रभु–परमात्मा की प्राप्ति अवश्य कर ले।

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

★ अहिंसा से ही मानव का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है।

★ जैसे प्रकाश सूर्य का, खुशबू फूल का प्रतीक है उसी प्रकार इन्सानियत इन्सान का प्रतीक है।

★ मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु आध्यात्मिक जाग्रति अत्यन्त आवश्यक है।

★ भटकन से बचने का एक ही उपाय है– मनुष्य तन के रहते प्रभु प्राप्ति।

★ चन्दन के पेड़ की भांति सन्त वार करने वाले पर भी उपकार ही करते हैं।

★ जिनके कर्म ऊँचे हैं वही ऊँचा है।

★ मानवता को अपनाना ही धर्म की पहचान है।

★ प्रभु ज्ञान की एक चिंगारी अज्ञानता तथा उसके साथ जुड़े पापों को पल में नष्ट कर देती है।

★ अभिमान से किया हुआ कर्म परमात्मा से कोसों दूर करता है।

★ इन्सानियत का दामन छोड़कर कामयाबियों का कोई महत्व नहीं है।

★ धर्म वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य, मनुष्य बनता है।

★ वैज्ञानिक विकास के साथ दया भाव होना जरूरी।

★ सद्गुरु की रहमत बिना परमात्मा से दूरी बनी रहती है।

★ केवल चलने में प्रगति नहीं होती, दिशा भी देखनी पड़ती है।

★ सर्वव्यापी की पहचान ब्रह्मज्ञानी सन्तों को साधन बनाने से होगी।

★ नफरतों के रिश्ते बहुत हो चुके, अब प्यार वाले रिश्ते बनाएं।

– बाबा हरदेव सिंह जी

★ परमपिता परमात्मा को प्रसन्न करने का एक मात्र उपाय है– जन–जन से प्यार।

★ ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का जीवन व्याख्यानों पर नहीं कर्म आधारित होता है।

– बाबा गुरबचन सिंह जी

★ प्रभु का दान मिलता रहेगा तो यह मन शान्त रहेगा।

★ सुख अध्यात्म में है सांसारिक पदार्थों में नहीं।

– निरंकारी राजमाता जी

★ जो अभिमानी और भेददर्शी है, जिसने सबसे वैर बांध रखा है उसके मन को कभी शांति नहीं मिलती।

– श्रीमद्भगवद्गीता

कर्मभूमि की श्रेष्ठता

प्रेरक–प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

जावालि तपस्वी थे। तप के बल पर उन्हें स्वर्ग मिला। देवता विमान लेकर आए। उन्हें उस पर बैठाकर स्वर्ग ले गये।

सम्पूर्ण स्वर्ग का निरीक्षण कर जावालि ने सोचा, ''वह उनके लिए सही जगह नहीं है।'' उन्होंने देवताओं से अनुरोध किया, "मुझे धरती पर वापस भेज दिया जाए।"

"क्यों, क्या कष्ट है यहाँ?" चकित हो देवताओं ने पूछा।

"दरअसल यहाँ न तो ज्ञान–वृद्धि का अवसर है और न सेवा–साधना का ही।" तपस्वी जावालि ने जवाब दिया।

"मगर सुविधाएं और विलास सामग्रियों की तो यहाँ कोई कमी नहीं है।" देवताओं ने भोग–साधनों का आकर्षण उन्हें दिखाया।

"हाँ, विलास और भोग की सामग्रियों की यहाँ कोई कमी नहीं है।"

"तो फिर?"

''पुरुषार्थ दिखाने का यहाँ कोई अवसर नहीं है, धरती पर है क्योंकि वह कर्मभूमि है। पुरुषार्थी को अपने कार्यों से जो आत्मसंतोष मिलता है, वह तो यहाँ बिल्कुल नहीं है।'' तपस्वी जावालि ने जवाब देते हुए आगे कहा, "अतएव मुझे वापस धरती पर भेज दीजिए। हमारी कर्मभूमि निस्संदेह स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।"

तपस्वी जावालि के आग्रह की दृढ़ता देखकर देवताओं ने उन्हें धरती पर भेज दिया, जहाँ वह प्रसन्नता के साथ अपना निर्धारित कार्य करते रहे।

प्रेरक–प्रसंग : प्रतीक्षा कुशवाहा

पितृ-भक्त बालक

किसी समय बगदाद पर हारुन रसीद नामक बादशाह शासन करता था। एक बार किसी कारण से वह अपने वजीर (मंत्री) पर नाराज हो गया। उसने वजीर और उसके पुत्र फजल को जेल में डलवा दिया। वजीर को ऐसी बीमारी थी कि ठण्डा पानी उसे हानि पहुँचाता था। उसे सवेरे हाथ–मुंह धोने को गर्म पानी की आवश्यकता होती थी। लेकिन जेलखाने में गर्म पानी कहाँ से आये; वहाँ तो कैदियों को ठण्डा पानी ही दिया जाता था। फजल रोज शाम को लोटे में पानी भरकर लालटेन के ऊपर रख दिया करता था। रातभर लालटेन की गर्मी से पानी गर्म हो जाता था। उसी से उसके पिता सवेरे हाथ–मुँह धोते थे।

उस जेल का जेलर बड़ा निर्दयी था। जब उसको पता लगा कि फजल अपने पिता के लिए लालटेन पर पानी गर्म करता है तो उसने वहाँ से लालटेन हटवा दी। अब फजल के पिता को ठण्डा पानी मिलने लगा। इससे उसकी बीमारी बढ़ने लगी। फजल से पिता का कष्ट देखा नहीं गया। उसने एक उपाय किया। शाम को वह लोटे में पानी भरकर अपने पेट से लोटा लगा लेता था। रातभर उसके शरीर की गर्मी से लोटे का पानी कुछ न कुछ गर्म हो जाता था। उसी पानी से वह सवेरे अपने पिता का हाथ–मुँह धुलाता था। लेकिन रातभर पानी भरा लोटा पेट से लगाये रहने के कारण फजल सो नहीं सकता था। नींद आने पर लोटे के पानी के गिर जाने का भय था। जब जेलर को बालक फजल की पितृभक्ति का पता लगा तो उसका निर्दयी हृदय भी दया से पिघल गया। उसके बाद उसने फजल के पिता को गर्म पानी देने की व्यवस्था कर दी।

प्रेरक प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

छोटी-सी सलाह

अब्राहम लिंकन जब अमेरिका के राष्ट्रपति थे तो एक छोटी–सी बालिका द्वारा भेजा गया पत्र मिला। उन्होंने उत्सुकतावश पत्र खोला, पत्र के साथ लिफाफे में लिंकन का दाढ़ीयुक्त एक चित्र भी था, जिसे बालिका द्वारा बनाया गया था।

लिंकन दाढ़ी नहीं रखते थे। उन्हें अपना दाढ़ी वाला चित्र अजीब लगा। पत्र में लिखा था। महोदय, आप लम्बे है तथा दुबले–पतले भी हैं। मेरा सुझाव है कि आप दाढ़ी बढ़ाये। इससे आपके व्यक्तित्व में निखार आयेगा।

लिंकन ने नन्हीं सी बालिका के सुझाव का सम्मान करते हुए, उसी दिन से दाढ़ी बढ़ानी शुरू कर दी।

जो सचमुच में महान होते हैं, वे छोटी–सी सलाह को भी अनदेखी नहीं करते।

बाल सुरक्षा दिवस (1 जून) पर विशेष
प्रस्तुति : डॉ. परशुराम शुक्ल

बाल-सुरक्षा

ईश्वर ने जग में मानव को,
सबसे अच्छा माना।
अपने जैसा उसे बना कर,
कहा धरा महकाना।।

एक नया वरदान समझकर,
माँ बच्चे को सेती।
बच्चे की मुस्कान हमेशा,
माता को सुख देती।।

दूध पिलाती, मालिश करती,
गीत सुना नहलाती।
दिन भर करती प्यार रात में,
अपने पास सुलाती।।

सपने मधुर देखती है वह,
बच्चे के जीवन के।
जैसे माली बाट जोहता,
खिलें फूल उपवन के।।

लेकिन वह तो खिलने के ही,
पहले मुरझा जाता।
भूख गरीबी लाचारी जब,
जोड़े उससे नाता।।

कूड़े कचरे में जाकर वह,
अपना बचपन पाता।
बीन थैलियां पॉलीथिन की,
जीवन नर्क बनाता।।

पेट नहीं भरता इससे तो,
बाल श्रमिक बन जाता।
भारत का यह भाग्य विधाता,
बिना मौत मर जाता।।

भारत में यह क्यों होता है?
मुझे बताओ बाँके।
एक ओर चाँदी की चम्मच,
एक ओर ये फाँके।।

रह सकते हैं सुखी तभी जब,
सब बच्चे मुस्काएं।
भेद बिना ये बस्ता ले कर,
शाला पढ़ने जाएँ।।

ईश्वर की अनमोल भेंट को,
समझो और बचाओ।
बाल सुरक्षा करके अपना,
यह कर्त्तव्य निभाओ।।

पेड़ की उदारता

प्रेरक कथा : कमल सोगानी

जंगल में यूं तो पेड़–पौधों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन एक पेड़ बड़ा विशाल था। इस पेड़ से धरती अपने सुख–दुख की बातें किया करती। चूंकि पेड़ घना और लम्बा था, इस कारण यह कई परिन्दों का बसेरा भी था। इस पर कई तरह के कीट–पंतगे भी विचरण करते रहते। बन्दर भी खूब उछल–कूद मचाया करते। कई बार मनुष्य भी इसके फल–फूल व लकड़ियां ले जाया करता। यह सब धरती देखा करती और मन में सोचा करती– 'कितना मूर्ख है यह पेड़? सदा दूसरों की सेवा में लगा रहता है?

एक दिन उसने पेड़ से कहा– 'मैं तुम्हें रस प्रदान करती हूँ, उसे तुम यूं ही क्यों बर्बाद कर देते हो? उसे तुम अपने पास रखा करो, किसी को दिया मत करो।'

इस पर पेड़ बोला– 'नहीं, माँ। ऐसा नहीं कर सकता। मैं देता हूँ, तभी फलता हूँ। देने में ही मुझे अच्छी शक्ति मिलती है।'

पेड़ ने धरती की बात पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया। उसने तो अपने जीवन के नियमों के अनुसार सर्वस्व लुटाना शुरू कर दिया। उसने अपने फूल दिये, फल दिये, पत्ते दिये, पक्षियों को बसेरा दिया और पथिकों को छाया दी।

इधर अपना कहा न मानते देखकर धरती उससे रूठ गई। पतझड़ आया। उसके सारे पत्ते सूखकर झड़ गये। उसकी सारी शोभा सुषमा समाप्त हो गई।

शोभा विहीन पेड़ को समझाते हुए धरती ने फिर से कहा– 'देखो, अपनी हालत, अब भी देना बंद कर दो।'

पेड़ ने धरती से विनम्रतापूर्वक कहा– 'माँ! मैं चाहता हूँ कि अपनी अन्तिम श्वास तक दूसरों के काम आऊँ। यदि इस क्षण भी मेरी सूखी लकड़ियां दूसरों के काम आ सके तो मुझे अपार संतोष होगा।'

पेड़ की उदारता से धरती प्रसन्न हो गयी। बसन्त आया, पेड़ फिर से फल–फूलों से लद गया। उसकी शोभा पहले से कई गुनी बढ़ गयी।

डार्क मैटर खोजने का तरीका विकसित किया

न्यूयार्क। भारतीय मूल की एक अमेरिकी प्राध्यापक के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने एक नया तरीका खोजा है जो डार्क मैटर के वर्चस्व वाली छोटी आकाशगंगाओं को ढूंढने में और आकाशगंगा की बाहरी डिस्क में मौजूद तरंगों का ब्यौरा देगा।

यहाँ 'रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' में सहायक प्राध्यापक सुकन्या चक्रवर्ती ने आकाशगंगाओं की अंदरूनी संरचना और द्रव्यमान को मापने के लिए आकाशगंगा की डिस्क के तरंगों का इस्तेमाल किया। चक्रवर्ती ने यह नतीजे सात जनवरी को पेश किए। उनके अध्ययन के परिणामों को 'एस्ट्रोफिजिकल जर्नल लेटर्स' को सौंपा गया है।

अदृश्य पार्टीकल को डार्क मैटर के नाम से जाना जाता है जिससे ब्रह्मांड का 85 फीसदी हिस्सा बना हुआ है। यह रहस्यमय पदार्थ खगोलशास्त्र में एक मूलभूत समस्या का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि यह समझा नहीं जा सका है। (भाषा)

जब सांप बना मेंढक का भोजन!

सिडनी। अभी तक आपने यही सुना होगा कि एक सांप मेंढक को निगल गया पर कभी आपने ये सुना है कि एक मेंढक सांप को निगल गया। जी हाँ, यहाँ की दुनिया बहुत बड़ी और विविधता से भरी है। ऑस्ट्रेलिया के जंगल और झीलें ऐसी ही विविधता से भरी पड़ी हैं। हम भारत में अक्सर ही मेढकों को सांप का निवाला बनते देखते हैं, पर ऑस्ट्रेलिया में एक ऐसा वीडियो क्लिप सामने आया है, जिसमें बड़े से मेंढक ने एक सांप को ही निगल लिया।

ऑस्ट्रेलिया में फिल्माए गए इस वीडियो में दिख रहा है कि मेंढक सांप को निगल गया है। दरअसल, मेढकों की कई प्रजातियां होती हैं। भारत में भी बड़े–छोटे मेंढक होते हैं। ऑस्ट्रेलिया में भी ऐसा है, पर वहाँ के कुछ मेंढक बहुत बड़े होते हैं जो सांप तक को निगल सकते हैं। ऐसे ही एक बड़े मेंढक ने सांप को ही निगल लिया है। इस वीडियो को ऑस्ट्रेलिया में किस जगह फिल्माया गया है, इसकी अभी कोई जानकारी नहीं है। पर मेंढक द्वारा सांप को निगलने का वाक्या पहली बार देखा और सुना गया है। वाकई बड़ी भयानक और अविश्वनीय प्रजातियां हैं ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका के जंगलों में।

(एजेंसी)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

एक बार अमरगढ़ के राजा वीर भान सिंह बहुत चिंतित थे और गहरी सोच में डूबे हुए थे।

उनकी चिंता का कारण अपने तीन मंत्रियों में से एक को प्रधानमंत्री चुनना था।

राजा ने तीनों की क्षमताओं को परखने का निर्णय लिया और तीनों को राज़दरबार में बुलाया।
राजा ने तीनों मंत्रियों को एक कमरे की तरफ इशारा करते हुए कहा कि इस कमरे में आप तीनों को बंद कर दिया जायेगा
और बाहर ताला लगा दिया जाऐगा। जो व्यक्ति इस ताले को खोलकर बाहर आएगा वही प्रधानमंत्री होगा।
तीनों मंत्रियों को कमरे में बंद कर दिया गया और तीनों ही गहरी सोच में डूब गए की ताला कैसे खोला जाए।

पहला मंत्री अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और दरवाज़े की तरफ बढ़ने लगा।
परन्तु दो कदम बढ़ते ही सोचने लगा यह तो असंभव है और वापस अपना स्थान ग्रहण कर लिया।
फिर तुरन्त ही दूसरा मंत्री अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और दरवाजे के पास पहुँचकर रूक गया और सोचा ये असंभव है। और वापस अपने स्थान पर बैठ गया।

अब तीसरा मंत्री अभी भी गहरी सोच में डूबा हुआ था और वह यह सोच रहा था कि शर्त रखने वाला व्यक्ति राजा है तो यह शर्त बेतुकी तो हो नहीं सकती।
और तभी मंत्री उठा और दरवाज़े के पास जाकर दरवाज़े को धक्का दिया और दरवाजा खुल गया।
असल में राजा ने बाहर से ताला नहीं लगवाया था और उस मंत्री को प्रधानमंत्री बना दिया गया।
तो बच्चों! इससे शिक्षा मिलती है कि समस्या का समाधान ढूढ़ँना चाहिए, प्रयास करोगे तभी लक्ष्य तक पहुँच पाओगे।

बाल कहानी : फारुख हुसैन

निश्चय

रोहित अपने कमरे में बैठा मोबाइल पर गेम खेल रहा था। तभी उसे उसकी मम्मी की आवाज सुनाई दी।

"रोहित जल्दी से मार्केट जाकर यह दवाईयां मेडिकल स्टोर से ले आओ।" रोहित की मम्मी ने रोहित से कहा।

"अभी जा रहा हूँ मम्मी," रोहित ने मम्मी से कहा और फिर वह गेम खेलने में लग गया।

"रोहित सुना नहीं तुमने।" रोहित की मम्मी ने दोबारा गुस्से में रोहित से कहा।

यह सुनकर रोहित दवाईयों का पर्चा लेकर मेडिकल स्टोर की तरफ चल दिया।

रोहित के पापा की तबियत कुछ दिनों से खराब चल रही थी।

रोहित कक्षा पांच का विद्यार्थी है। वह पढ़ाई में बहुत ही अच्छा है और वह खेलकूद में भी हमेशा आगे रहता है। लेकिन उसमें एक खराब आदत है, उसे जब भी कोई काम कहा जाता वह उस काम को टाल जाता। इस कारण उसको हमेशा डांट पड़ती रहती थी।

उसके मम्मी–पापा उसे बहुत समझाते कि उसे जो भी काम बताया जाये उस काम को वह तुरन्त किया करे, लेकिन रोहित उनकी बात को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता।

इसी खराब आदत की वजह से उसे कई बार पछताना भी पड़ा था लेकिन फिर भी उसकी आदत में कोई सुधार नहीं हुआ। वह कुछ दिन तो सही रहा लेकिन फिर से पहले जैसा हो गया।

अभी कुछ दिनों पहले की ही बात है उसके चाचा ने उसके जन्मदिन पर उसे एक रेंजर साइकिल गिफ्ट की थी इस कारण वह बहुत खुश था क्योंकि वह कई बार पापा से साइकिल दिलवाने के लिये कह चुका था उसके सभी दोस्तों के पास रेंजर साइकिल थी, लेकिन पापा ने उसे अभी तक साइकिल नहीं दिलवायी थी। जब उसके चाचा ने उसे साइकिल गिफ्ट की तो उसे मजा ही आ गया।

साइकिल में लॉक नहीं लगा था इसलिये उसकी मम्मी उससे कई बार कह चुकी थी कि दुकान पर ले जाकर लॉक लगवा लो वरना

साइकिल चोरी हो सकती है। लेकिन रोहित ने मम्मी की बात पर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन रोहित साइकिल लेकर अपने दोस्त सोनू से मिलने के लिये गया उसने साइकिल सोनू के घर के बाहर ही खड़ी कर दी और वह सोनू के घर के अन्दर चला गया। लेकिन जब वह बाहर आया तो उसकी साइकिल वहाँ नहीं थी यह देखकर उसकी हालत खराब हो गयी, उसने साइकिल बहुत ढूंढी, मगर साइकिल का कहीं पता नहीं चला कोई साइकिल को चुरा ले गया था। उसे पछतावा हो रहा था कि उसने मम्मी की बात क्यों नहीं मानी। अगर वह मम्मी की बात मानकर साइकिल में लॉक लगवा लेता तो उसकी साइकिल चोरी नहीं होती।

इस घटना के बाद वह कुछ दिन तो सबकी बात मानकर सही काम करता रहा, लेकिन कुछ दिनों बाद वह फिर पहले जैसा हो गया।

वह तुरन्त मार्केट की तरफ दौड़ा और मेडिकल स्टोर से दवाई लेकर घर की ओर चल दिया। जब वह घर पहुँचा तो घर पर भीड़ लगी हुई थी। उसने देखा उसकी मम्मी खड़ी रो रही थी। सामने ही उसके पापा बिस्तर पर बेहोश पड़े हुए थे और डॉक्टर पापा को इंजेक्शन लगा रहे थे।

''वे दवाईयां जो मैंने लिखकर दी थी अगर समय पर इन्हें दे दी गयी होती तो इनका यह हाल नहीं होता।'' डॉक्टर मम्मी से कह रहे थे।

यह सुनकर उसकी आंखों में आंसू आ गये उसे लग रहा था कि पापा की हालत का जिम्मेदार वह खुद है। अगर वह सही समय पर दवाईयां ले आता तो उसके पापा की ऐसी हालत नहीं होती।

''मम्मी मुझे माफ कर दो अब मैं हमेशा आपकी बात मानूंगा।'' रोहित ने रोते हुए मम्मी से कहा और उनसे लिपट गया।

रोहित दवाई का पर्चा लेकर मार्केट की तरफ चल पड़ा। लेकिन वह मार्केट में न जाकर वह खेल के मैदान में पहुँच गया, जहाँ उसके दोस्त क्रिकेट खेल रहे थे वह भी क्रिकेट खेलने लगा। धीरे–धीरे शाम हो गयी। तभी उसे ध्यान आया कि उसे दवाईयां घर लेकर जाना है।

इंजेक्शन लगने के कुछ ही देर बाद उसके पापा को होश आ गया। अब वह स्वस्थ लग रहे थे। यह देखकर वह बहुत खुश हुआ। लेकिन अब उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि जो काम उसे बताया जायेगा उस काम को वह तुरन्त करेगा। अब वह पूरी तरह से बदल गया था।

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

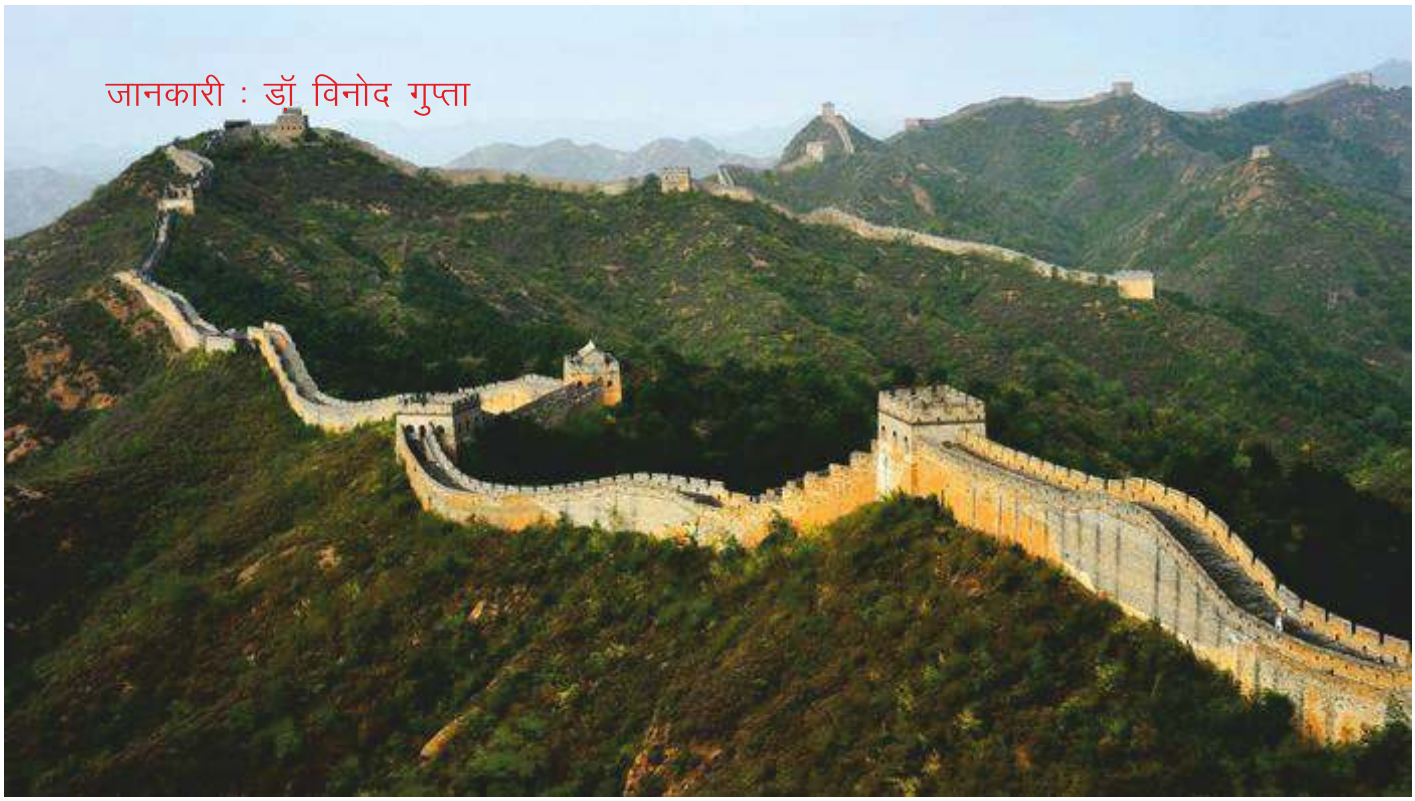

ग्रेट वाल ऑफ चाइना

ग्रेट वाल ऑफ चाइना के नाम से प्रसिद्ध चीन की दीवार विश्व की सबसे लम्बी दीवार है। इनकी ऊँचाई 4.5 से 12 मीटर के बीच और मोटाई 9.8 मीटर है। इसकी मुख्य दीवार की लम्बाई 3460 किलोमीटर तथा मुख्य दीवार की सहायक दीवारों की अतिरिक्त लम्बाई 2860 किलोमीटर है। यह पोहाई की खाड़ी पर स्थित शानहाइकुवान से लेकर यूमेन कुवान और यांगकुवान तक है।

सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था इसका निर्माण। 220 से 206 ईसा पूर्व में चीन के शासक किन शि हुआंग के शासनकाल में बनकर हुई थी तैयार। चीन की दीवार को ईंटों और पत्थरों से बनाया गया था। जगह–जगह पर इसके ऊपर छोटी–छोटी मीनारें बनी हुई हैं।

आप सोचते होंगे कि आखिर इतनी बड़ी दीवार बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी? तो जान लीजिए, इसके पीछे चीन की सुरक्षा का उद्देश्य था। ईसा से लगभग 240 वर्ष पूर्व चीन छोटे–छोटे प्रांतों में बंटा हुआ था। इन प्रांतों को शीद्ध हुआंग ने मिलाकर अपना एक बड़ा साम्राज्य खड़ा किया। इस साम्राज्य पर मंगोलों के आक्रमण का खतरा सदैव बना रहता था। मंगोल इस साम्राज्य के उत्तरी सिरे पर रहते थे। इस खतरे से बचाव के लिए ही इतनी बड़ी दीवार बनाने का निर्णय लिया गया। लेकिन इस दीवार के बन जाने के बाद भी मंगोलों के

आक्रमण का खतरा टला नहीं क्योंकि दीवार कहीं न कहीं से टूटती रहती। इस टूटे हिस्से से मंगोलों को प्रवेश करने का अवसर मिल जाता।

16वीं सदी तक इसकी बराबर मरम्मत होती रही। सन् 1966 तक इसका लगभग 51.5 किलोमीटर हिस्सा नष्ट हो चुका था। जुलाई 1979 में एक बांध के निर्माण में बाधा आने के कारण दीवार के कुछ हिस्सों को विस्फोटकों से उड़ा दिया गया था।

विश्व के सात आश्चर्यों में शामिल चीन की महान दीवार कई स्थानों से टूट–टूटकर नष्ट हो रही है। देखरेख के अभाव में दूरदराज के इलाकों में इसे झाड़ियों और पेड़ों ने ढक लिया है।

दीवार देखने के लिए दुनियाभर से लाखों पर्यटक यहाँ हर वर्ष पहुँचते हैं। ज्यादातर को राजधानी बीजिंग के पास का सुरक्षित क्षेत्र ही दिखाया जाता है। 11 राज्यों से गुजरने वाली यह दीवार 80 किलोमीटर उत्तरपूर्व बीजिंग से स्थित है।

अक्टूबर 2012 में चीन में नेशनल डे पर छुट्टियां मनाने करीब 40 करोड़ लोग घर से बाहर निकले। चीन की महान दीवार का नजारा देखने लायक था। यहाँ पर्यटकों के सैलाब के कारण पैर रखने के लिए जगह भी नहीं बची।

प्रेरक–प्रसंग : नेहा नागपाल

लिंकन का दृढ़ संकल्प

लिंकन के नौजवानी के दिनों की घटना है। वह बहुत निर्धन थे लेकिन उनके अन्दर आगे बढ़ने, कुछ कर गुजरने की बड़ी ललक थी, कठिन संकल्प था।

एक बार उन्हें पता चला कि नदी के दूसरी ओर ओगमोन नामक गाँव में एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश रहते हैं, जिनके पास कानून की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। सो लिंकन कड़ाके की सर्दी के दिनों में उस बर्फीली नदी में नाव में बैठ गए। नाव वह स्वयं खे रहे थे। आधी नदी उन्होंने पार की होगी कि नाव एक बड़े बर्फ के टुकड़े से टकराकर क्षतिग्रस्त हो डूब गई। फिर भी साहस के धनी नौजवान लिंकन निराश नहीं हुए। उन्होंने बड़ी मुश्किल से तैरकर नदी पार की और जा पहुँचे रिटायर्ड जज के घर।

इत्तेफाक से उस समय जज का घरेलु नौकर भी नहीं था, सो लिंकन को जज के छोटे–मोटे काम भी करने पड़ते। वह जंगल से लकड़ियां बटोरकर लाते और घर में पानी भी भर कर लाते।

पारिश्रमिक के नाम पर उन्होंने सिर्फ एक ही इच्छा व्यक्त की कि वह जज की सारी किताबें पढ़ने भर को पा सके।

जज ने खुशी–खुशी उन्हें अपनी पुस्तकें पढ़ने का मौका दिया। संकल्प के धनी लिंकन आगे चलकर अमरीका के राष्ट्रीय जीवन में छाए रहे और देश के सर्वोच्च पद पर जा विराजे राष्ट्रपति के रूप में।

सच ही है–

'संकल्प हो तो आदमी क्या नहीं कर सकता।'

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

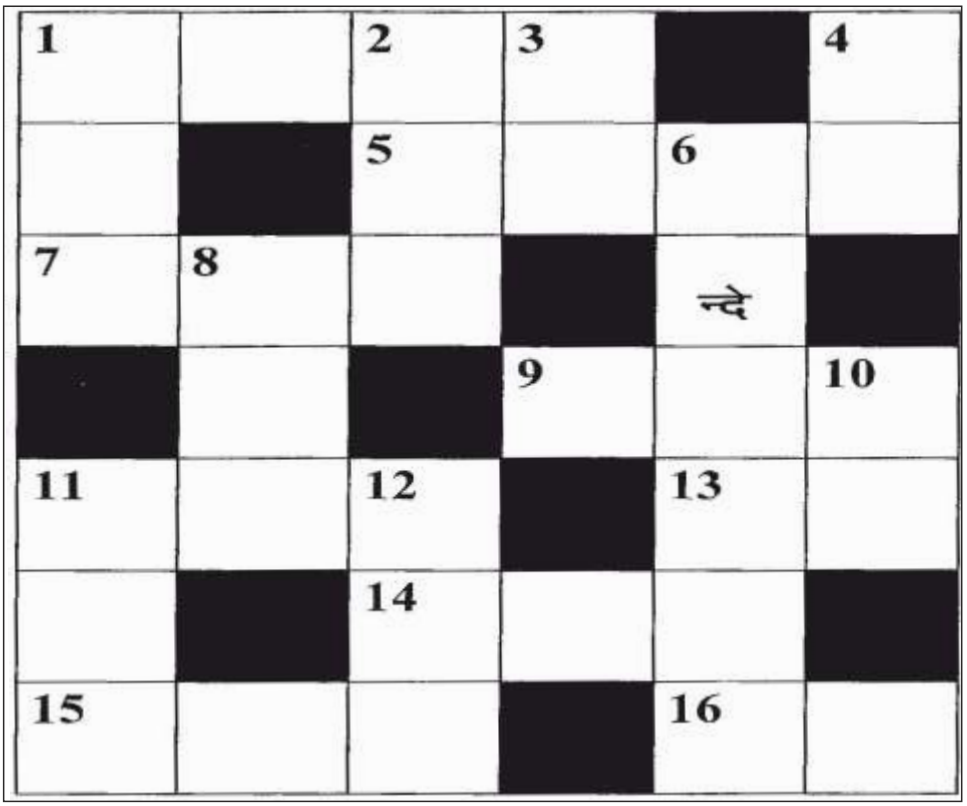

बाएं से दाएं →

1. ग्रामोफोन का आविष्कार थॉमस अल्वा ..... ने किया (एडिसन/मारकोनी)।
5. जनवरी से अगला महीना।
7. फिलिस्तीन के नेता ..... अराफात को 1994 में नोबल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया।
9. बेमेल शब्द छांटिए : पपीता, अंगूर, समास, अनार।
11. शुद्ध शब्द छांटिए : प्राथना/प्रार्थना।
13. रोटी सेंकने का लोहे का एक पात्र।
14. काले मुँह वाले बंदर की तरह का एक जानवर।
15. विंध्य और सतपुड़ा श्रृंखलाओं के बीच से होकर बहने वाली नदी।
16. इस वाक्य में छुपे एक महीने का नाम ढूंढ़िए : अगले महीने प्रीतम ईरान घूमने जाएगा।

ऊपर से नीचे↓

1. भारत देश ..... महाद्वीप में स्थित है।
2. यात्रा का एक पर्यायवाची शब्द।
3. बेमेल शब्द छांटिए : आम, बर्फी, साग, नर।
4. अंतरिक्ष में जाने वाला विश्व का प्रथम व्यक्ति ..... गगारिन था।
6. भारत का राष्ट्रगीत।
8. गौतम बुद्ध के बचपन का नाम।
10. ढ़ाई का आधा।
11. नवीन का विपरीत शब्द।
12. भारत का एक प्राचीन विश्वविद्यालय।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

कविता : रूपनारायण काबरा

पंछी की व्यथा

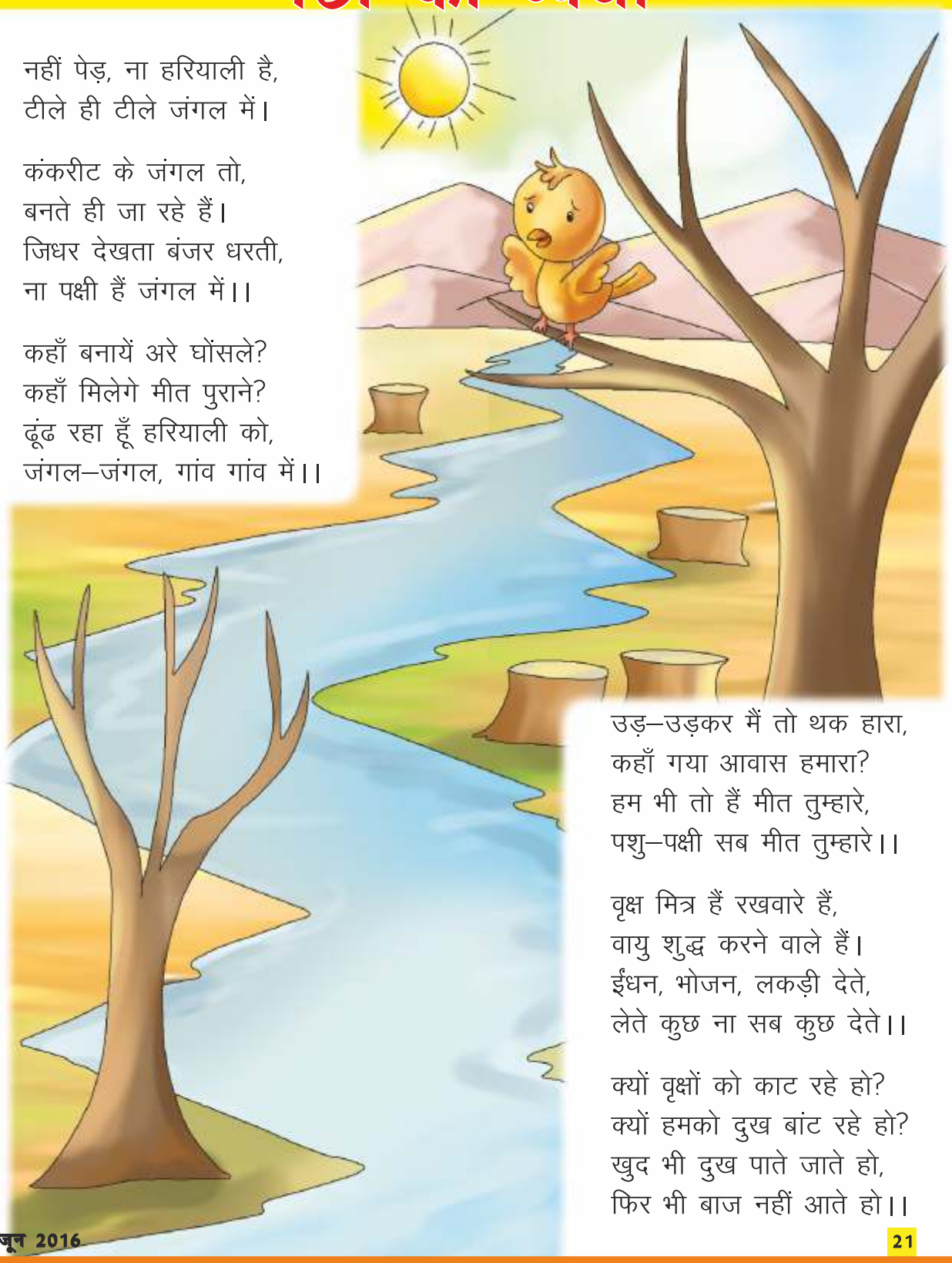

नहीं पेड़, ना हरियाली है,
टीले ही टीले जंगल में।

कंकरीट के जंगल तो,
बनते ही जा रहे हैं।
जिधर देखता बंजर धरती,
ना पक्षी हैं जंगल में।।

कहाँ बनायें अरे घोंसले?
कहाँ मिलेगे मीत पुराने?
ढूंढ रहा हूँ हरियाली को,
जंगल–जंगल, गांव गांव में।।

उड़–उड़कर मैं तो थक हारा,
कहाँ गया आवास हमारा?
हम भी तो हैं मीत तुम्हारे,
पशु–पक्षी सब मीत तुम्हारे।।

वृक्ष मित्र हैं रखवारे हैं,
वायु शुद्ध करने वाले हैं।
ईंधन, भोजन, लकड़ी देते,
लेते कुछ ना सब कुछ देते।।

क्यों वृक्षों को काट रहे हो?
क्यों हमको दुख बांट रहे हो?
खुद भी दुख पाते जाते हो,
फिर भी बाज नहीं आते हो।।

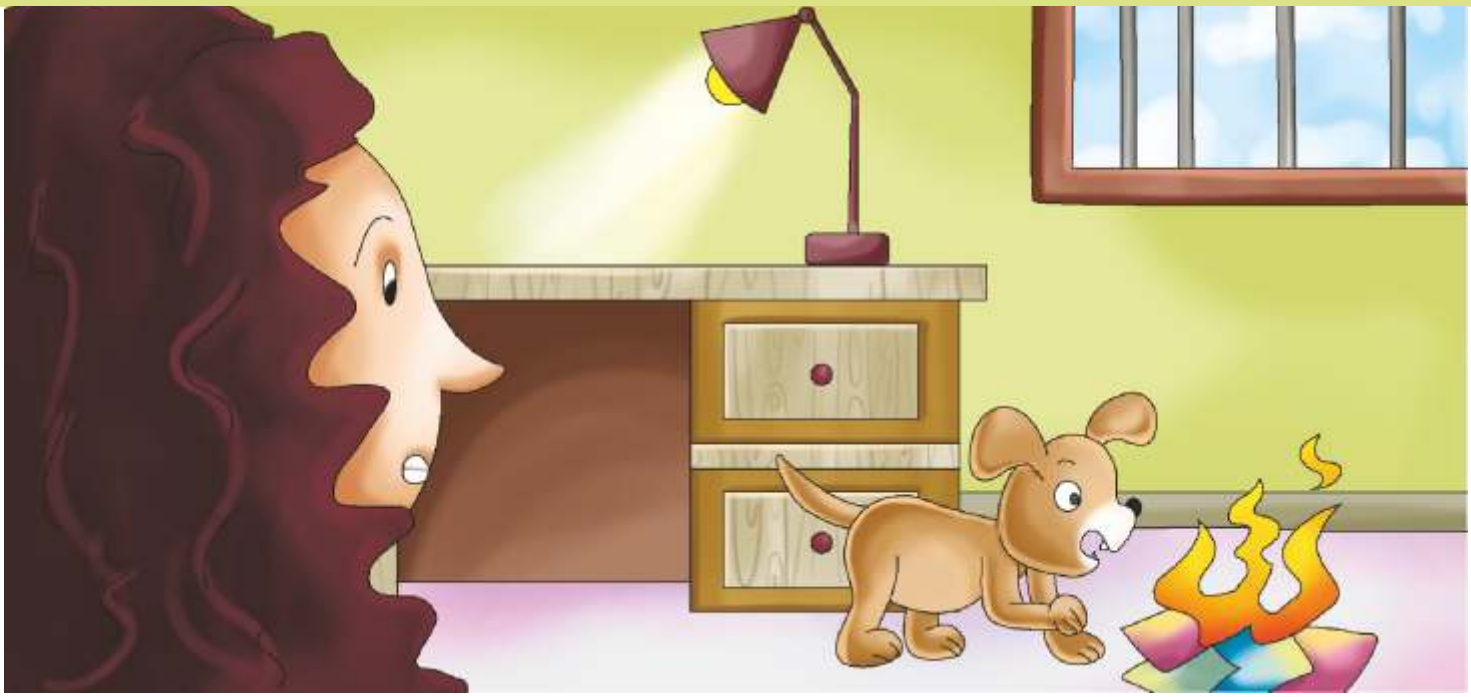

प्रेरक–प्रसंग : दिनेश दर्पण

दयालु न्यूटन

संसार का हर बड़ा व्यक्ति सदाचारी होता है। सदाचारी व्यक्ति कभी भी कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे किसी को ठेस पहुँचे। न्यूटन संसार के एक बहुत बड़े वैज्ञानिक और गणितज्ञ थे। उन्होंने एक कुत्ता पाल रखा था। वे उस कुत्ते से बहुत प्रेम करते थे। कुत्ता भी अपने मालिक से बहुत प्यार करता था। वह अपने मालिक पर जान छिड़कता था।

एक रात को न्यूटन महोदय कुछ लिख रहे थे। लिखने में वे ध्यानमग्न थे। उनकी एक हस्तलिखित पुस्तक की पाण्डुलिपि भी पास ही मेज पर रखी हुई थी। कुत्ता भी मेज पर बैठा था और उसके सामने मेज पर एक मोमबत्ती जल रही थी।

अचानक लिखते–लिखते न्यूटन महोदय को कोई बात याद आ गई और वे कुछ समय के लिए कमरे से बाहर चले गये। उनके जाने के बाद अचानक हुई आवाज से कुत्ता हड़बड़ाते हुए और भौंकते हुए उठा। इस उठा–पटक में मेज पर जल रही मोमबत्ती मेज पर ही रखी हस्तलिखित पाण्डुलिपि पर गिर गई। मोमबत्ती की लौ से पाण्डुलिपि के पन्नों में आग लग गई और थोड़ी ही देर में बहुमूल्य पुस्तक राख के ढेर में बदल गई।

न्यूटन को उस पुस्तक की पाण्डुलिपि को दूसरे ही दिन छपने के लिए भेजना था। जब वह वापस लौटकर कमरे में आये तो उन्होंने उस बहुमूल्य पुस्तक की पाण्डुलिपि को राख के ढेर के रूप में देखा तो कुछ समय के लिए वह हक्के–बक्के रह गये। फिर सामान्य होकर कुर्सी पर बैठकर लिखने लगे।

जानकारी : दिनेश दर्पण

सीमेण्ट की जन्मकथा

सेंटकवोंटिन में जोजेफ मोनियर नाम एक व्यक्ति रहता था। वह पेशे से माली था। जोजेफ मोनियर को कभी–कभी पागलपन सवार हो जाया करता था। वह उस पागलपन की अवस्था में अपने बगीचे के गमलों को उठा–उठाकर फेंक देता था, जिससे वे टूट जाते थे।

उसने एक दिन सोचा कि यदि वह ऐसे गमले बनवा ले जिन्हें पटकने पर भी उन्हें कोई नुकसान न पहुँचे। यदि ऐसा हो जाए तो कितना अच्छा रहेगा। बस यह विचार मन में आने पर उसने अपने इस विचार पर काम करना शुरू कर दिया। सबसे पहले उसने मिट्टी के साधारण गमले बनाए, मगर वे टूट गये। फिर उसने मोटे–मोटे गमले बनाये, तो वे बहुत भारी हो गये। फिर उसने कंकरीट का उपयोग किया लेकिन बात फिर भी नहीं बनी, मगर इस बार उसने गमले के चारों ओर मोटे–मोटे तार लपेट दिये। मगर कुछ ही दिनों बाद उन तारों में जंग लग गई और वे बेकार हो गये। मगर जोजेफ ने अब भी हार नहीं मानी और वह अपने उद्देश्य के लिए लगातार प्रयत्न में लगा रहा।

आखिर एक दिन सोचते–सोचते उसने यह निर्णय किया कि लोहे के तारों का एक गमला बनाया जाये और उस पर कंकरीट चढ़ा दी जाए।

जोजेफ मोनियर का यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ। इस प्रकार से तैयार किया गया गमला सबसे अधिक मजबूत अधिक प्रमाणित हुआ। जोजेफ के इस पागलपन के कारण जिस चीज का आविष्कार हुआ उसे रेनफोर्स्ड कंकरीट कहा जाता है। रेनफोर्स्ड कंकरीट के आविष्कार के कारण ही गगनचुंबी भवनों, सड़कों, पुलों आदि का निर्माण सम्भव हो सका। ●●●

न्यूटन महोदय की जगह यदि कोई और होता तो अपनी बहुमूल्य पुस्तक की पाण्डुलिपि के जल जाने पर कुत्ते को जान से मार देते। परन्तु न्यूटन महोदय ने अपने कुत्ते को पीटना तो दूर की बात उसे डांटा तक नहीं। उनका बहुत बड़ा नुकसान हो गया था। परन्तु सहृदय न्यूटन महोदय यह जानते थे कि मूक पशु ने अपनी अज्ञानता के कारण ही ऐसा किया है। उन्होंने मूक पीड़ा से पीड़ित अपने कुत्ते की आँख से पश्चाताप के आँसू गिरते हुए देखकर उसके सिर पर प्यार से हाथ फिराकर उसकी पीड़ा को कम किया।

सच ही है क्षमाशील, नम्र और धैर्यपूर्ण व्यवहार न्यूटन महोदय जैसे महान व्यक्ति का ही हो सकता है। इसी सदाचार ने उन्हें संसार का सबसे बड़ा वैज्ञानिक और साथ ही साथ एक अच्छा इन्सान बनाया। ●●●

वन्य जीव

जिसे देखकर वनराज भी अपना रास्ता बदल लेता है...

प्रस्तुति : जयेन्द्र

जंगल का एक अनोखा जीव ऐसा भी है, जिसे देखकर वनराज भी थर–थर कांपता है। इस जीव के शरीर पर नुकीले, विषैले घने कांटे होते हैं, जो छेड़ने पर सुई की तरह चुभते हैं। प्रकृति के इस विलक्षण जीव को 'सेही' नाम से जाना जाता है।

सेही का शरीर 60–70 सेंटीमीटर लम्बा व वजन 18–20 किलोग्राम होता है। शरीर का वर्ण काला तथा कोई प्रजाति भूरे रंग की भी होती है। दुम 4–5 सेंटीमीटर की होती है।

यूं यह एक स्तनपायी जीव है, और है बड़ा आलसी। किसी एक ही जगह टिककर गधे की तरह घण्टों चिन्तन करता रहता है। अपने शरीर पर नुकीले कांटों का राज होने के कारण ये किसी से भी नहीं डरता। जब इसे सनक सवार होती है तो यह घूमते–घूमते खूंखार जानवरों की बस्ती में भी पहुँच जाता है। शेर, चीता, जंगली हाथी, जंगली भेड़िये, जंगली कुत्ते तो इसे देखकर घुर्राकर अपना रास्ता बदल लेते हैं। यदि कोई जानवर भूल से इसके पास आ भी जाता है तो यह फुर्ती से अपने शरीर के कांटों को नुकीली सुइयों की तरह खड़े कर लेता है। कांटे देखते ही जानवर दूर भाग जाता है। यदि कोई जानवर इससे संघर्ष करने का प्रयास भी करता है तो ये अपने शरीर को इस तरह झटका देता है कि उसके कांटे तीर के समान निकलते हैं और दुश्मन के शरीर में बुरी तरह धंसकर घाव कर खून निकाल देते हैं। हाँ, इन्हीं कांटों के बल पर यह जंगल के राजा से तनिक भी नहीं डरता और उसका मुकाबला करता है। कांटों की मार खाकर शेर उल्टे पांव दौड़ने लगता है, क्योंकि इस जीव के कांटे शरीर में लगते ही पूरे शरीर में जहर फैला देते हैं, फिर दुश्मन का जीवित रहना संभव ही नहीं।

मादा सेही वर्ष में एक बार दो से लेकर पांच तक बच्चों को जन्म देती है, जन्म के समय बच्चों के शरीर पर कांटे नहीं होते। दो–ढाई वर्षों में बच्चे बड़े हो जाते हैं, इनके शरीर पर कांटे भी निकल आते हैं और खुद अपना शिकार कर अपना पेट भरने लगते हैं।

वैज्ञानिक जानकारी :
डॉ. घमण्डी लाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : गर्म मौसम में तुम्हें पसीना क्यों आता है?

उत्तर : जल तुम्हारे शरीर का तापमान नियंत्रित करने में सहायक है। गरमी के मौसम में तुम्हें प्यास अधिक लगती है जिससे तुम ज्यादा पानी पीते हो। यह पानी तुम्हारे शरीर की त्वचा के नीचे पसीने के रूप में इकट्ठा रहता है और वाष्पीकृत भी होता रहता है। परिणामस्वरूप, तुम्हारे शरीर से ऊष्मा का कुछ भाग निकल जाता है। इस कारण तुम्हें ठंड का अनुभव होता है और तुम्हारे शरीर का तापमान भी नियंत्रित रहता है।

प्रश्न : ठोस पदार्थ कठोर क्यों होते हैं?

उत्तर : पदार्थ तीन अवस्थाओं में पाए जाते हैं– ठोस, द्रव एवं गैस। प्रत्येक पदार्थ की संरचना छोटे–छोटे अणुओं से मिलकर होती है। अणुओं के बीच आकर्षण–बल भी होता है। ठोस पदार्थों की संरचना में अणु पास–पास रहते हैं और इनके बीच आकर्षण–बल भी अधिक मिलता है। यही कारण है कि ठोस पदार्थ कठोर होते हैं। इनके कुछ उदाहरण हैं– ईंट, पत्थर, लोहा आदि।

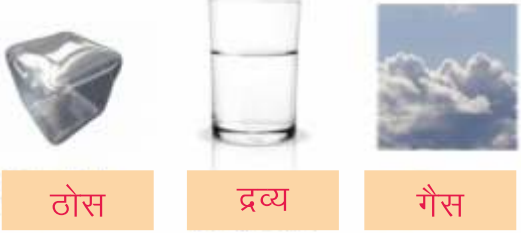

प्रश्न : जंग क्यों लगता है?

उत्तर : जब लोहा ऑक्सीजन गैस के संपर्क में आता है तो लोहे का ऑक्साइड बनता है जिसे 'जंग' कहते हैं। जंग भूरे रंग का एक पदार्थ होता है। इस अभिक्रिया में नमी उत्प्रेरक का कार्य करती है। लोहा तथा ऑक्सीजन शुष्क अवस्था में संयोग नहीं करते, परन्तु नमी की उपस्थिति में ही इसमें क्रिया होती है। यह क्रिया बरसात के दिनों में अधिक होती है क्योंकि इस मौसम में वायु में नमी अधिक रहती है।

क्या आपको ज्ञात है?

प्रस्तुति : उदय ठाकुर

आलू सुदूर दक्षिणी अमेरिका की सब्जी है। वर्ष 1492 में पेरू से आलू विभिन्न देशों से होते हुए भारत आया है। भारत में सर्वप्रथम आलू मेजर यंग ने पहाड़ों की रानी मसूरी में 1815 में बोया था। बेंजामिन फ्रेंकलिन प्रसिद्ध वैज्ञानिक आलू के बड़े शौकीन थे। कंद को संस्कृत में आलू कहते हैं। यूरोपवासी आलू को 'इड एपिल' कहते हैं।

बासमती चावल को भारत के उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में लाने का श्रेय अफगानिस्तान के बादशाह दोस्त मोहम्मद खान को है। यह वर्ष 1839 का समय था। चावल के बीज सुरक्षित रखने के लिए खोखली बाँस में मिट्टी भर कर रखी जाती थी इसलिए इसका नाम बाँस–मिट्टी पड़ा था जो बाद में बासमती में प्रणीत हो गया।

चाय चीन देश का उपहार है। ब्रिटेन ने सर्वप्रथम वर्ष 1644 में चीन के जिमन नाम के स्थान से चाय आयात की थी। जिमनवासी चाय को 'टे' कहते थे। यही 'टे' बाद में 'टी' हो गई। चीन और जापान चाय को 'चा' कहते थे।

लीची चीन की देन है। चीन के लाइचू नाम के स्थान से आने से इस फल का नाम लीची पड़ा। एक रोचक बात यह है कि चीन में एक लीची का दाना नीलामी में पाँच लाख पचपन हजार युआन प्राप्त हुई थी। यह लीची 400 वर्ष प्राचीन वृक्ष की थी जिसे मात्र वहाँ के राजा खाते थे।

गन्ना की खोज सर्वप्रथम यूनान के जंगल में आज से दो हजार वर्ष पूर्व एक आदिवासी ने की थी। ईसा के 800 वर्ष पूर्व गायना जाति के लोग गन्ने की खेती करते थे। उन्हीं के नाम में पहले गायना फिर गन्ना हुआ। भारत में गन्ने की खेती ईसा से 338 वर्ष पूर्व हुई थी। सिकन्दर गन्ने का बड़ा प्रेमी था।

फ्रैंचबीन : इतिहासकारों के अनुसार आज जो फली फ्रैंचबीन कहलाती है। वह 14वीं सदी में दक्षिण अमेरिका से यूरोप पहुँची थी। पोप क्लेमैंट सप्तम ने इन्हें अपनी भतीजी कैथरीन मैडिची को उसके हैनरी द्वितीय के साथ विवाह के अवसर पर उपहार में दिया था। यह कहते हुए कि रंगीन बेशकीमती जवाहरातों से कम न समझो इनको। यह धरती के गर्भ से प्रकट होने वाले रत्नों के बराबर मूल्यवान है।

तरबूज पहली बार अफ्रीका में पाया गया था और वहीं से यह सारी दुनिया में गया। एक अनुमान के मुताबिक इसे ईसा से 2000 वर्ष पूर्व नील नदी की घाटी में उगाया जाना शुरू हुआ। दुनिया भर में तरबूज की 1200 से अधिक किस्में पाई जाती हैं। इसका वनज 80 किलोग्राम तक हो सकता है।

आम : के बारे में एक घटना है। कहा जाता है कि दसवीं सदी में इस फल का पता एक लंगड़े फकीर ने लगाया था। वह फटे झोले में कुछ फल लेकर वह राजा के दरबार में आया और राजा को फल भेंट किए। राजा आम खाकर बेहद खुश हुआ और फौरन अपने सिर से ताज उतारा और आम के बाकी फलों पर रख दिया। प्राचीन लेखों के अनुसार आम की खेती 6000 वर्षों से हो रही है।

टमाटर : यूरोप के जंगलों से रसोईघर में आने वाली सब्जी टमाटर को पूर्व में लोग जहरीली समझकर नहीं खाते थे। एक दिन एक नौजवान ने हिम्मत कर एक टमाटर खाया। बस टमाटर प्रसिद्ध होकर दुनिया भर में चर्चित हो गया। चिली की राजधानी सेटियागो में टमाटर फेंक कर 'टोमाटीनो' उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव की शुरूआत स्पेन से वर्ष 1945–50 के मध्य हुई थी।

मूंगफली : ब्राजील से पूरी दुनिया में जानी जाने लगी। बेंगलुरू में सर्वप्रथम भारत में मूंगफली की खेती हुई और वहाँ वर्ष में एक बार 'मूंगफली मेला' लगता है।

बाल कविता : रेनू भटनागर

तितलियों

तितलियों तुम्हारे नगर में,
है क्या रंगों की फैक्टरी।
कौन है मैनेजर तुम्हारा,
किसको बनाया है सेक्रेटरी।।

कौन है रचयिता तुम्हारा,
रंगता है कौन तुम्हारे पर,
और किसने बसाया है,
रंग–बिरंगा तुम्हारा ये नगर।।

हर फूल पर तुम बैठकर,
क्या गुनगुनाती हो।
चुपके से उनके कान में,
क्या कहकर जाती हो।।

सुनकर जिसे हर फूल पर,
मुस्कान आती है।
उनकी यह मुस्कान प्यारी,
मन को भाती है।।

इस कदर तुम चपल–चंचल,
पकड़ में नहीं आती।
पास आते ही मेरे,
तुम झट से उड़ जाती।।

बुरी आदतों का परिणाम

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

चंपकवन में रहने वाला बंटी बंदर बहुत ही शरारती था। जंगल के सभी जानवर उसकी शरारतों से इतने तंग आ चुके थे कि ज्योंहि उन्हें बंटी अपने घर की तरफ आता दिखाई देता, वे अपने दरवाजे बंद कर लेते। उन्हें पता था कि बंटी अंदर आकर बिना मतलब हर चीज छेड़ेगा और कुछ न कुछ जरूर तोड़ जायेगा। सड़क पर आने–जाने वाले यदि कोई खाने–पीने की चीजें ले जाते तो बंटी झपट्टा मारकर भाग जाता।

बंटी की करतूतों से जंगल के सभी जानवर परेशान हो उठे थे। पड़ोसी भीमा हाथी का टीवी, रोमी भालू का पंखा और हीरामन हिरण का सुनहरी मछलियों वाला कांच का सुन्दर 'एक्वेरियम' (मछलीघर) भी बंटी ने तोड़–फोड़ डाला था। ये बड़ी कीमती चीजें थीं। उसने छोटी चीजों का नुकसान किया उनकी तो कोई गिनती ही नहीं थी। एकाध बुरी आदत हो तो कोई बर्दाश्त भी कर ले, पर बंटी बंदर में तो सभी बुरी आदतें थीं।

चंपकवन के स्कूल में जंगल के छोटे–छोटे बच्चे पढ़ते थे। वे भी बंटी की हरकतों से परेशान थे। बंटी ने सोचा, क्यों न जंगल के स्कूल के इन छोटे–छोटे जानवरों से दोस्ती की जाये। ये बच्चे दोपहर के भोजन के लिए लंच बॉक्स तो लाते ही हैं। बस फिर क्या, मेरा काम बन जायेगा।

वह स्कूल के मैदान में पीपल के पेड़ पर बैठकर छात्रों को आकर्षित करने का प्रयास करने लगा, पर बच्चों ने उसकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वे उसकी आदतों से परेशान थे।

बंटी मन ही मन बड़बड़ाया, ध्त तेरी की, कम्बख्तों ने मेरा इरादा भांप लिया लगता है। यहाँ भी मेरी तरकीब काम नहीं आई। वह उदास हो गया। तभी उसका साथी शंटी बंदर उछलता–कूदता वहाँ आ गया। आते ही उसने पूछा– क्यों भाई, मुँह क्यों लटका रखा है?

–बात ऐसी नहीं है, लगता है अब भूखे मरने के दिन आ गये हैं, जो भी तरकीब सोचता हूँ काम नहीं आती है।– बंटी ने कहा।

–मेरे होते हुए तू भूखा मरेगा? ठहर, मैं तरकीब बताता हूँ। पर पहले वादा कर हम दोनों साथ–साथ ही रहेंगे।– शंटी ने कहा।

फिर शंटी ने बंटी के कान में कुछ कहा जिसे सुनकर उसकी आँखों में चमक आ गई। उछलता हुआ बंटी बोला– यह हुई न बात! चलो आज ही इस तरकीब को आजमाते हैं।

शंटी बंदर ने स्कूल के छोटे–छोटे जानवरों से दोस्ती कर ली। उनको इस बात का भरोसा दिलाया कि परीक्षा में बंटी तुम लोगों की मदद करेगा। वह परीक्षा के समय तुम्हारी सहायता करेगा। तुम्हें मुफ्त में पढ़ायेगा और टीचर जी से बोलकर तुम्हें पास करवायेगा। यह सुनकर फिसड्डी छात्र खुशी से उछल पड़े।

सभी जानवर अब बंटी व शंटी के लिए खाना भी लाने लगे। अब उनके सामने पेट भरने की समस्या नहीं रही। बंटी और शंटी ने अब लूटमार करना भी शुरू कर दिया था। जंगल के छोटे जानवर जो कुछ लेकर जाते दिखाई देते तो वे उसे डरा–धमकाकर लूट लेते। छोटी–छोटी वारदातें करते–करते उनका हौंसला बढ़ गया था।

एक दिन रोमी लोमड़ी बन–ठनकर, चश्मा लगाकर जंगल के बाजार से खरीददारी करने निकली तो दोनों बंदर भी उसके पीछे लग गये। रोमी उनके इरादे भांप गई थी, उसने मन ही मन कहा– बेटो, तुम्हारा पाला आज लोमड़ी मौसी से पड़ा है। आज तुम्हें छठी का दूध न याद दिला दिया तो मुझे लोमड़ी मत कहना।

यह सोचकर वह 'सुपर मार्केट' चली गयी। सामान खरीदा, पर्स खोलकर बिल का भुगतान किया और सामान का बैग लिये निकली। ज्योंही वह कुछ दूर गई होगी कि बंटी–शंटी बंदर सामने आ गये। उन्होंने रोमी लोमड़ी का रास्ता रोकते हुए कहा– मौसी, तुम्हारे पर्स में जितनी भी नगदी है, वह हमारे हवाले कर दो।

मुस्कुराते हुए रोमी लोमड़ी ने कहा– खाली पर्स लेकर तुम क्या करोगे? तुमने मुझे मौसी कहा है तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करूँगी। यह बताओ कि तुम्हें कितने रुपयों की जरूरत है। संकोच मत करो, बेझिझक बताओ! तुम्हारी मौसी मौके पर तुम्हारे काम नहीं आई तो कौन आयेगा?

बंटी और शंटी लोमड़ी की मीठी–मीठी बातों में आ गये। बंटी बोला– मौसी, हमें केवल पांच सौ रुपये चाहिए।

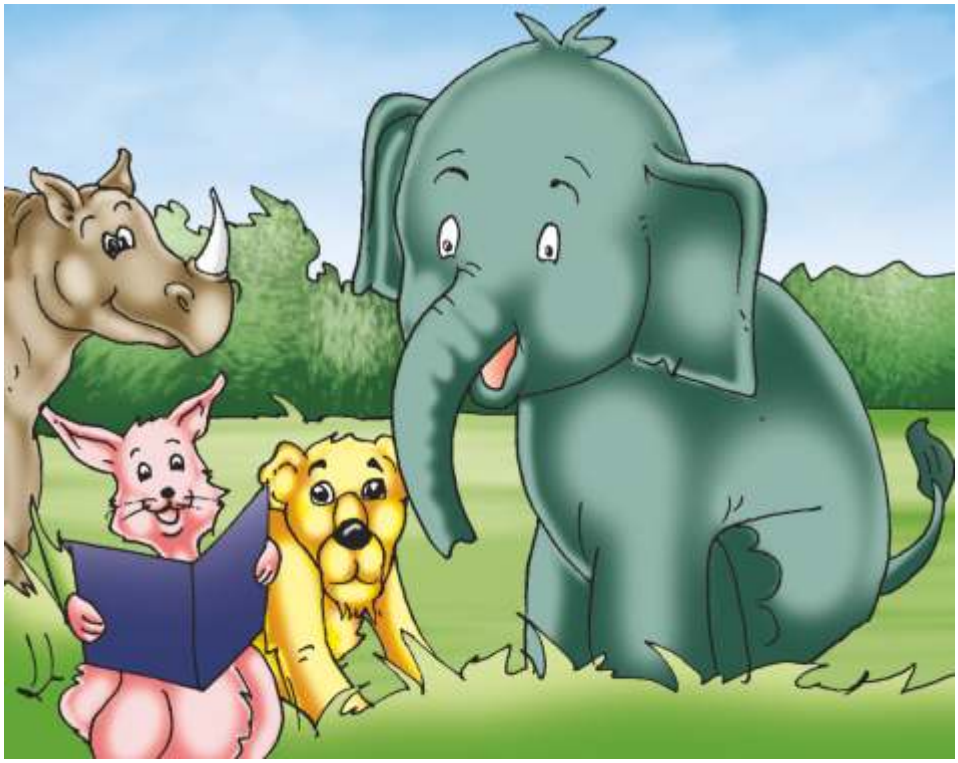

इधर जंगल के विद्यालय के बच्चे चिन्तित थे। परीक्षा होने में कुछ ही समय बचा था और बंटी–शंटी कई दिनों से दिखाई नहीं दे रहे थे। फिसड्डी छात्रों को तो दिन में तारे दिखाई देने लगे थे।

जब छात्रों ने बंटी व शंटी की तलाश की तो पता चला कि वे जंगल के थाने में कैद थे।

तब जंगल विद्यालय में पढ़ने वाले टोनी बकरे ने अपने मित्रों से कहा– नाहक ही हम बंटी–शंटी की बातों में आ गये थे। हमने पढ़ाई में ध्यान नहीं दिया, यही हमारी भूल थी।

रॉकी हिरण ने समझाते हुए कहा– अभी भी समय है, सफलता मेहनत करने से मिलती है। चलो देर आए, दुरुस्त आए, जागो तभी सवेरा, अभी भी समय है, रात–दिन एक कर परीक्षा में पास होना है।

बंटी–शंटी को अपनी बुरी आदतों की सजा मिल चुकी है।

जंपी जिराफ, जोरु शेर, गुज्जु हाथी, गबरू भालू, मोंटी बकरी, शक्ति घोड़ा, हरियल गैंडे आदि सभी छात्रों ने रॉकी हिरण की बात का समर्थन किया। सभी जानवर परीक्षा की तैयारी में लग गये।

–बेटे, मेरे इस पर्स में तो सौ–पचास रुपये ही होंगे, तुम पहले मिल जाते तो मैं खरीददारी नहीं करती। अब मैंने तुमसे वादा किया है तो इंतजाम करना ही पड़ेगा। तुम लोग यहीं ठहरो। मैं दुकानदार को सामान वापस देकर रुपये लेकर आती हूँ।– कहकर रोमी लोमड़ी 'सुपर मार्केट' में वापस चली गई।

रोमी ने दुकानदार को सारी बात बताई तो उसने तुरन्त जंगल के पुलिस थाने में सूचना दे दी। बंटी और शंटी तो प्रसन्न होते हुए लोमड़ी मौसी का इन्तजार कर रहे थे। वह तो नहीं आई पर जंगल का थानेदार चीतासिंह अपने सिपाहियों के साथ आ पहुँचा। पुलिस को देखकर दोनों भागने लगे तो सिपाहियों ने उन्हें धर दबोचा और थाने में ले जाकर बन्द कर दिया।

हाथ और कलाइयों के बल उड़ने वाले

अनोखे जीव

लेख : जयेन्द्र

प्रकृति ने चमगादड़ों को ऐसी शारीरिक रचना प्रदान की है, जिससे वे पंख नहीं होने पर भी उड़ सकते हैं। एक तरह से इनके हाथ और कलाइयां पूरी तरह उड़ने वाले पंखों के रूप में काम आती हैं।

चमगादड़ को हवा में उड़ते देख इन्हें कई लोग पक्षी मान लेते हैं, जबकि ये स्तनधारी जीव है। इनके हाथ व कलाइयों में ही एक तरह का प्राकृतिक जादू भरा है, जो इनके उड़ने में सहायक है। इनकी भुजाओं और उंगलियों के बीच पोलीथीन जैसी पतली झिल्ली होती है, जो पिछली टांगों तक जुड़ी रहती है।

चमगादड़ आँख की जगह कान और नाक के सहारे अपनी उड़ान संचालित करते हैं। इनकी नाक 'ट्रांसमीटर' और कान 'रिसीवर' का काम करते हैं। उड़ते समय चमगादड़ लगातार ऐसी पराध्वनिक तरंगें निकालते हैं जो मनुष्य को सुनाई नहीं देती। ये तरंगें किसी चीज से टकराती हैं तो उसकी लौटी हुई प्रतिध्वनि चमगादड़ के कानों से टकराती है जिससे वे मार्ग की बाधा का सही–सही पता लगा लेते हैं।

चमगादड़ों का प्रजनन काल अक्टूबर से दिसम्बर–जनवरी तक माना जाता है। मार्च–अप्रैल तक अधिकांश बच्चे पैदा होते हैं। जब फल–फूलों का मौसम होता है। मादा चमगादड़ ज्यादातर एक ही बच्चे को जन्म देती है। जन्म के समय बच्चे अंधे और असहाय होते हैं तथा माँ के स्तन से चिपके रहते हैं। जन्म के समय ही इन बच्चों के दूध के दांत होते हैं। उड़ने योग्य होने तक बच्चे अपनी माताओं की छाती से ही चिपके रहते हैं और दूध पीते हैं।

चमगादड़ घने पत्तों वाले पेड़ के बजाय उस पेड़ पर अधिक संख्या में लटके रहते हैं, जिस पर पत्ते कम हो, ये भी सूरज की रोशनी की दिशा में विश्राम करते हैं। जैसे–जैसे दिन ढलता है, ये धूप की दिशा में स्थान परिवर्तन करते रहते हैं। ये इतने गंभीर स्वभाव वाले प्राणी हैं कि छेड़ने पर भी आसानी से नहीं उड़ते। बहुत अधिक परेशान करने और जोर–जोर से शोर मचाने पर ही ये अपना स्थान छोड़कर दूर चले जाते हैं।

फ्लाइंग फॉक्स नामक चमगादड़ धीमी गति से उड़ते हैं, मगर इनकी उड़ान शक्तिशाली होती है। ये कई घण्टों तक उड़ सकते हैं। एक ही उड़ान में ये 200 मील लम्बा सफर भी तय कर लेते हैं। शाम होते ही ये अपने विश्राम स्थल से उड़ने लगते हैं। भोर होते–होते ये वापस अपने बसेरे पर लौट आते हैं।

जाड़े में ये प्रातः 9 बजे के करीब उड़ते हैं और कोहरे से भीगे हुए अपने पंखों को सुखाते हैं। पेड़ पर आराम फरमाने के लिए सुरक्षित और आरामदायक जगह के लिए इनमें आपस में घमासान लड़ाइयां भी होती हैं।

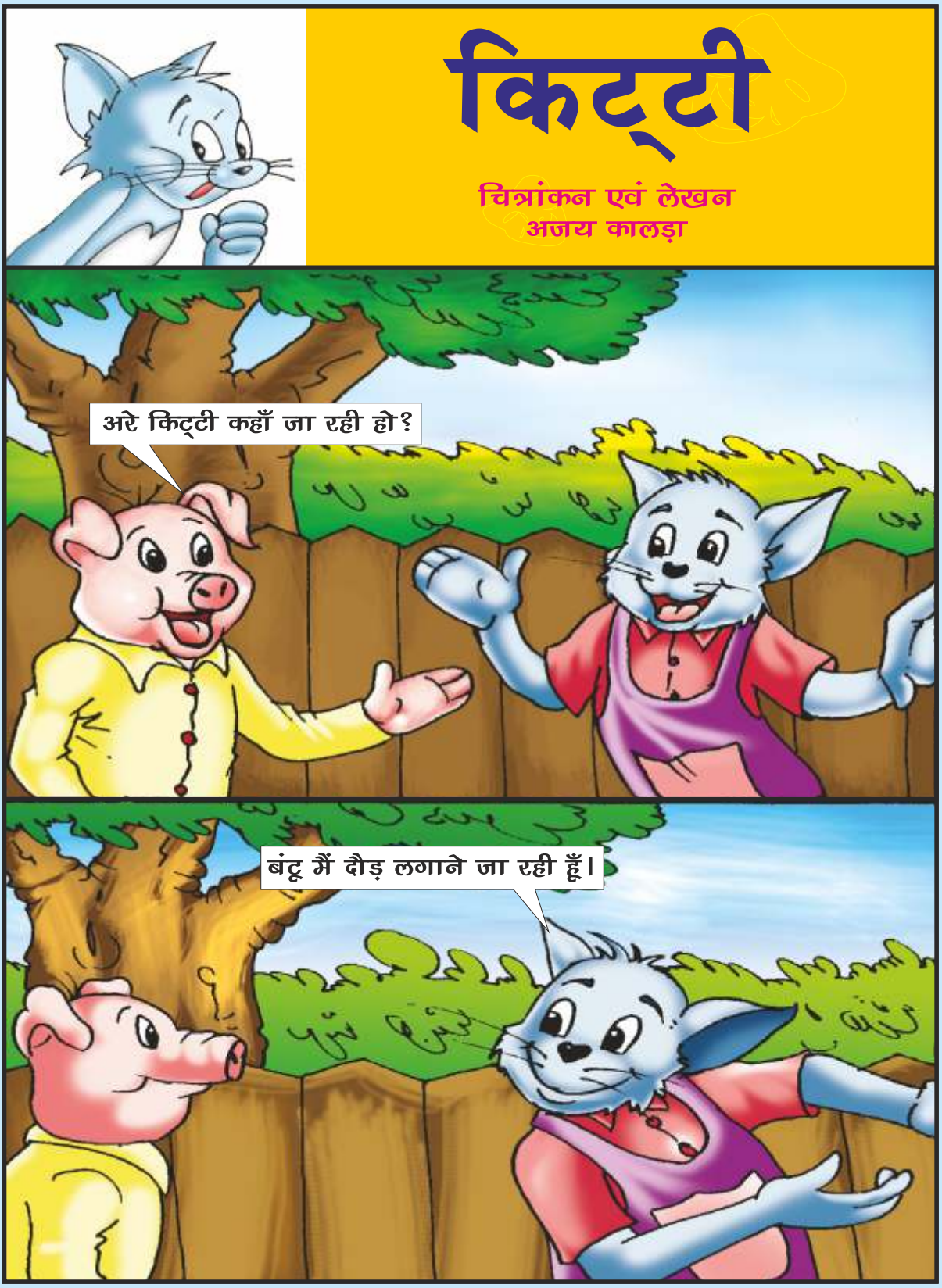
किट्टी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
अरे किट्टी कहाँ जा रही हो?
बंटू मैं दौड़ लगाने जा रही हूँ।

चलो मैं भी चलता हूँ।
दौड़ तो लगा ली अब क्या करें? चलो खेलते हैं। बँटू तुम 10 तक गिनो, मैं छुपती हूँ।
1, 2, 3, ...10 किट्टी मैं आ रहा हूँ।

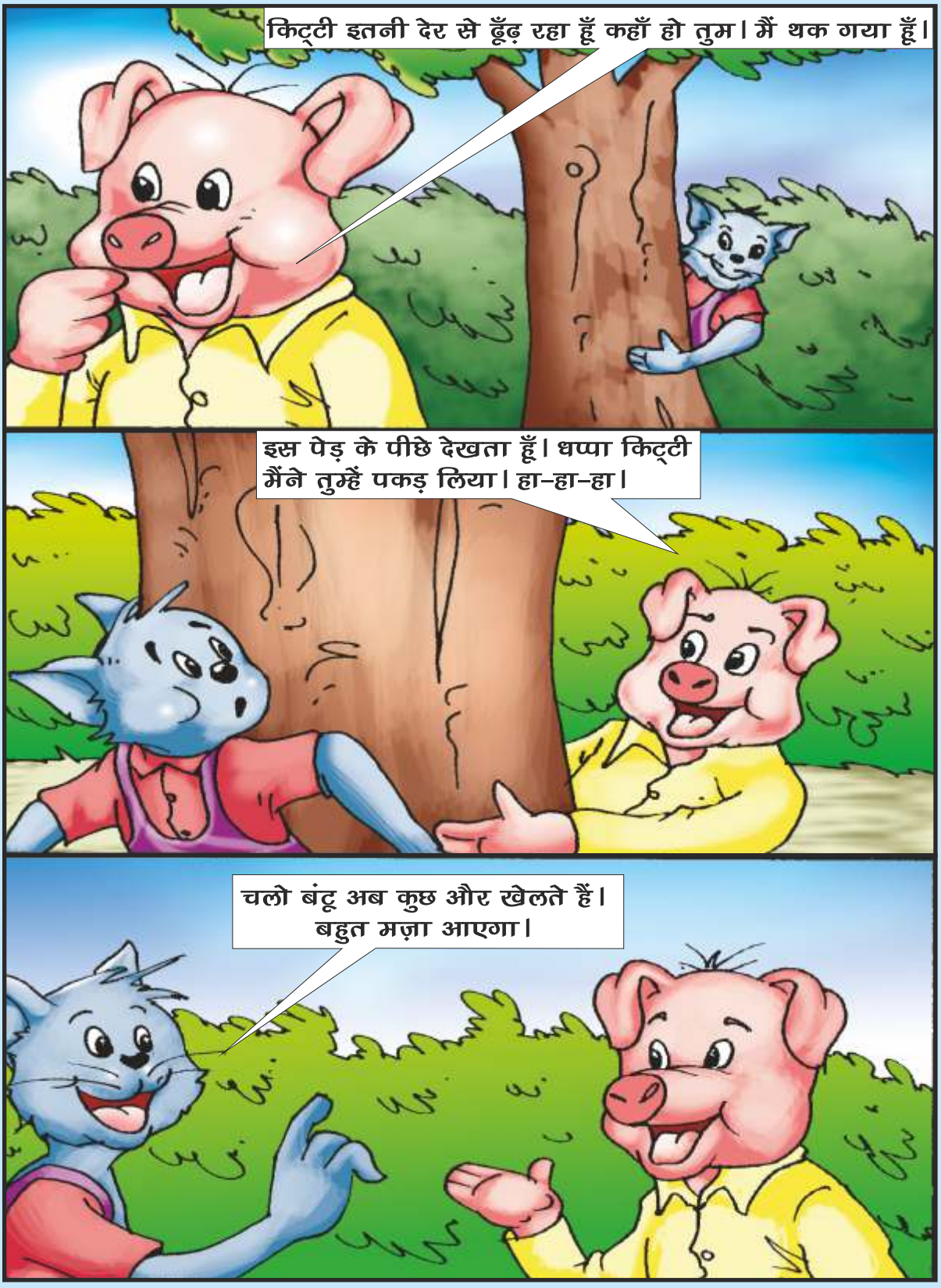
किट्टी इतनी देर से ढूँढ़ रहा हूँ कहाँ हो तुम। मैं थक गया हूँ।
इस पेड़ के पीछे देखता हूँ। धप्पा किट्टी मैंने तुम्हें पकड़ लिया। हा-हा-हा।
चलो बंटू अब कुछ और खेलते हैं। बहुत मज़ा आएगा।

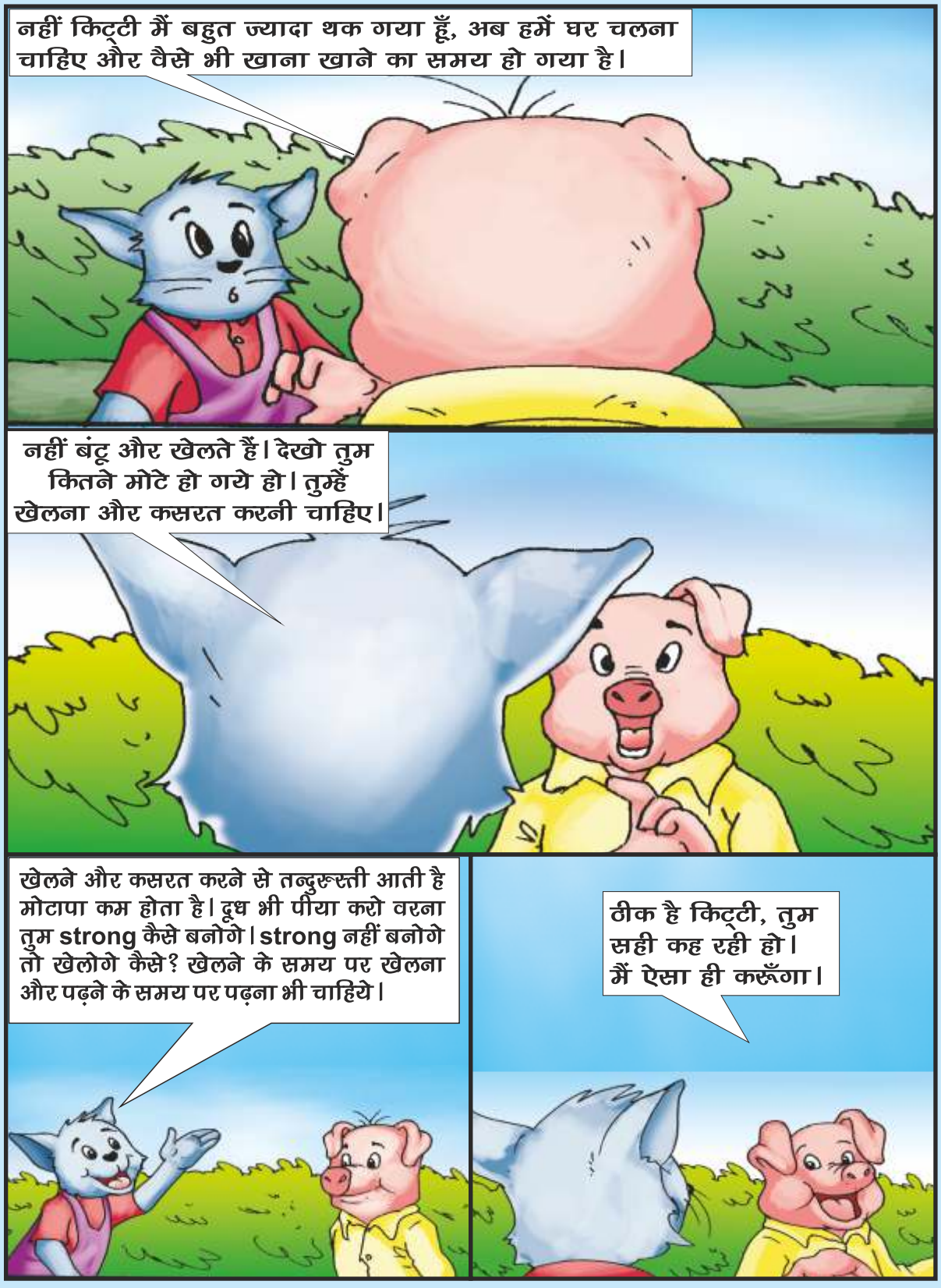
नहीं किट्टी मैं बहुत ज्यादा थक गया हूँ, अब हमें घर चलना चाहिए और वैसे भी खाना खाने का समय हो गया है।
नहीं बंटू और खेलते हैं। देखो तुम कितने मोटे हो गये हो। तुम्हें खेलना और कसरत करनी चाहिए।
खेलने और कसरत करने से तन्दुरूस्ती आती है मोटापा कम होता है। दूध भी पीया करो वरना तुम strong कैसे बनोगे। strong नहीं बनोगे तो खेलोगे कैसे? खेलने के समय पर खेलना और पढ़ने के समय पर पढ़ना भी चाहिये।
ठीक है किट्टी, तुम सही कह रही हो। मैं ऐसा ही करूँगा।

प्रेरक–प्रसंग : किशोर डैनियल

बलिदान

एक व्यक्ति नदी पर बने पुल पर से गुजरती रेल लाईन की चौकीदारी करता था। पुल के पास ही एक झोपड़ी बनाकर वह उसमें रहता था। उसी के साथ उसका 16 साल का लड़का भी रहता था। एक दिन भारी बरसात के साथ तूफान आया। रात की ट्रेन आने से पहले चौकीदार रेल लाईन को देखने गया। चौकीदार का बेटा झोपड़ी में ही रहा। उसके थोड़ी देर बाद नदी में भयंकर बाढ़ आई और उससे उस पुल का एक हिस्सा ढह गया। थोड़ी देर बाद चौकीदार का लड़का बाहर निकला तो उसने देखा कि नदी की बाढ़ से पुल का एक हिस्सा टूट गया है। उसने अपने पिता को पुकारा, पर कुछ भी उत्तर नहीं मिला। उसे ध्यान आया कि रात की अन्तिम गाड़ी आने का समय हो गया है; इसलिये यदि गाड़ी को रोका न गया तो वह नदी में चली जाएगी और सब यात्री मर जाएंगे। उसने निश्चय किया कि किसी भी तरह से गाड़ी को रोकना चाहिए।

पुल पर आने से पहले रेलगाड़ी एक सुरंग में से होकर आती थी। सुरंग इतनी संकरी थी कि उसमें खड़े होने की भी जगह न थी। उसने सोचा कि अगर पटरियों के बीच में पत्थर रखकर उस पर खड़ा होकर लाल रोशनी दिखाई जाए तो गाड़ी जरूर रूकेगी। उसने वैसा ही किया और वह पटरियों के बीच में पत्थर रखकर वह उस पर खड़ा होकर लाल रोशनी दिखाने लगा। इतने में ही गाड़ी आती दिखाई दी।

ट्रेन को देखकर लड़का चिल्लाने लगा– 'पुल टूट गया है, पुल टूट गया है....।' ट्रेन ड्राइवर ने उसे देखकर गाड़ी रोकने की कोशिश की परन्तु गाड़ी बहुत वेग में थी। इसलिए एकदम रूक न सकी। लड़के को जोरदार धक्का लगा और लड़का दूर जा गिरा। थोड़ी दूर जाकर गाड़ी रूक गई। ड्राइवर ने आगे जाकर देखा तो पुल को टूटा पाया। ड्राइवर को समझते देर न लगी कि लड़के ने अपनी जान देकर सैंकड़ों लोगों की जान बचाई है।

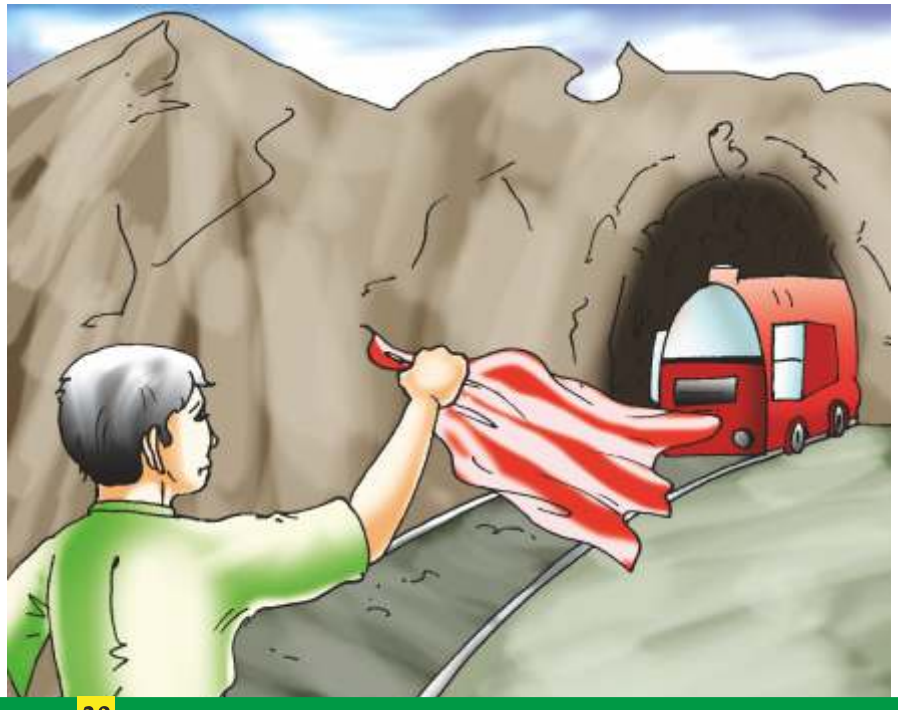

दूसरे दिन बड़े सम्मान के साथ उसका अन्तिम संस्कार किया गया। उसकी कब्र पर लिखा गया– ''नेलसन जॉन, उम्र 16 वर्ष ने साहस का परिचय देते हुए दूसरों की जान बचाने हेतु परोपकार के लिए मरा और अपने प्राण देकर सैंकड़ों लोगों की जान बचाई।''

–धन्य है वह मां जो ऐसे बलिदानियों को जन्म देती है।

बाल कविता : राजेन्द्र निशेश

चूहों की पाठशाला

सब चूहे मिल पढ़ने आये,
संग में तख्ती, स्लेट लाये।

बन्दर मामा पाठ पढ़ाते,
मिट्ठू से वे रटते जाते।

दो दूनी का पढ़ो पहाड़ा,
मिक्की बोला लगता जाड़ा।

मुझको घर जल्दी है जाना,
जाकर मीठा हलवा खाना।

तभी वहाँ इक बिल्ली आयी,
बन्दर जी ने डाँट पिलायी।

उसके गले की बजी घंटी,
चूहे भागे समझे छुट्टी।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

पाठ पढ़ाओ चिड़िया

मेरे आंगन आओ चिड़िया,
मीठे गान सुनाओ चिड़िया।
खीर बनाई है अम्मा ने,
तुम भी आकर खाओ चिड़िया।
फुदक–फुदक कर टहनी टहनी,
अपना नाच दिखाओ चिड़िया।
धरा कटोरी में है पानी,
अपनी प्यास बुझाओ चिड़िया।
पंख नहीं है मेरे फिर भी,
उड़ना मुझे सिखाओ चिड़िया।
संग सहेली अपनी आकर,
सब का जी बहलाओ चिड़िया।
मिलजुल कर सब को रहना है,
ऐसा पाठ पढ़ाओ चिड़िया।

प्रेरक–प्रसंग : शिखा ग्रोवर

जीवन चलने का नाम

मेरे पड़ोस में दस वर्षीय एक प्यारी–सी बेटी रहती है आनंदिता। अभी वार्षिक परीक्षाफल आया। वह बहुत अच्छे अंक से उत्तीर्ण हुई और कक्षा में प्रथम आई। जब वह घर परीक्षाफल लेकर पहुँची तो बहुत उदास थी और आँख में आंसू थे। मुझे मालूम था कि वह बहुत अच्छे अंक लाने वाली बच्ची है तो फिर आँख में आंसू क्यों? यह एक रहस्य था। हमारे पड़ोस में आपस में बहुत प्यार होने के कारण आनंदिता का रोना दिल को अच्छा नहीं लगा। शाम को जैसे ही मुझे आनंदिता की माँ दिखाई दी मैंने उनसे आनंदिता की उदासी का कारण पूछ ही लिया। पता चला कि विद्यालय ने बच्चों के सेक्शन अलग–अलग कर दिए हैं। वह इसी कारण रो रही थी कि उसके दो विशेष मित्र अब बिछुड़ रहे थे। 'नये मित्र बनाना, नये सिरे से' यह विचार उसके मन को बिल्कुल नहीं भा रहा था।

इस घटना को दो–तीन दिन बीत गये। अगले दिन नई कक्षा में जाना था। उसकी माँ ने बताया कि घर के सभी सदस्य आनंदिता की उदासी से बहुत परेशान हैं। विद्यालय भी गये थे प्रिंसीपल महोदया से बात करने कि आनंदिता को पुराने मित्रों के साथ एक ही कक्षा में कर दिया जाए। पर कुछ लाभ न हुआ।

मुझे यह सब सुनकर बहुत दुःख हुआ और लगा कि कुछ दिन की बात है फिर से नये दोस्त बन जाएंगे और मैंने विचार किया और उसको समझाने की ठानी।

उससे मैंने पूछा– कितने सालों से ये मित्र तुम्हारे साथ हैं?

आनंदिता ने बताया– पिछले पांच साल से ।

मैंने कहा– अभी तो ये सब इसी विद्यालय में हैं। आते–जाते दिखेंगे। अगर इनमें से कोई विद्यालय ही बदल ले तो क्या तुम उनके पीछे विद्यालय बदलोगी?

आनंदिता ने धीरे से कहा– नहीं।

कल को पढ़ाई या नौकरी के कारण किसी और जगह जिन्दगी ले गई तो तुम क्या करोगी?

वो चुप रही। आंसू गिरने बन्द हो गए। नये मित्रों को एक मौका दो। खुशी–खुशी नई कक्षा में प्रवेश करो। हँसकर या रोकर। सकारात्मक

या नकारात्मक यह तुम्हारा अपना चयन होगा। जिस भाव से जाओगी वैसा ही भाव आगे पाओगी। उसे मेरी बात थोड़ी–थोड़ी समझ आ रही थी। उसकी माँ ने भी बहुत समझाने का प्रयास किया था परन्तु कई बार हम अपने माँ–बाप की सुनना ही नहीं चाहते। हम उन्हें कुछ समझते ही नहीं। भूल जाते हैं कि वे बहुत अनुभवी हैं। उसे और समझाने का प्रयास किया कि तुम एक सप्ताह प्रयास करके देखो। नये मित्रों से दिल नहीं लगा तो यकीनन ही तुम्हें पुराने मित्रों के साथ मेल करवा देंगे। वह इस शर्त पर राजी हो गई। इस आश्वासन से वो नई कक्षा में नये उत्साह के साथ जाने को राजी हो गई। दो–चार दिन बीत जाने पर आनंदिता की माँ शाम को मेरे घर आई और बताया कि उसकी नई कक्षा में कई नई सहेलियां बन गई थीं। इसी कारण अब उसका दिल भी लगने लगा था।

बच्चों, जीवन चलने का नाम है। नई आशा, नई उम्मीद से जब हर दिन को स्वीकारेंगे तो हर दिन आपके लिए कुछ नया लाएगा। दोस्तों का छूट जाना तो कुछ भी नहीं, जीवन में बहुत कुछ छूट जाता है, जीवन फिर भी चलता रहता है। जीवन बहुत कुछ नया भी लाता है। जीवन को अपनाना सीखें, यह भी हमें अपनाता जाएगा।

प्रेरक प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

गौरव से जियो

एक व्यक्ति सरदार पटेल से मिलने पहुँचा। उसने उनसे पूछा– ''आपका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और अनुकरणीय है। मुझे ऐसी शिक्षा दीजिए, जिससे मेरी भी ख्याति सब ओर हो जाए।''

सरदार पटेल ने उसे सन्त कबीर की पंक्तियां सुनाई–

''कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हँसा हम रोएं।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोएं।।

यह पंक्तियां सुनाकर वे उस व्यक्ति से बोले– ''महत्वपूर्ण यह नहीं कि तुम्हारी ख्याति सब जगह हो, महत्वपूर्ण यह है कि ऐसा जीवन जियो, जिससे तुम्हारे मन में संतोष हो, चित्त निर्भय हो और तुम्हारे हृदय में इतना आनन्द हो कि जितने दिन तुम जियो गौरव से जियो।''

लघु कथा : डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

नकल का मजा

एक बार एक गुरु ने अपने शिष्य को एक कथा सुनाई– एक गाँव में दो युवक मित्र रहते थे। वे साथ–साथ रहते–घूमते थे। एक बार दोनों एक धनी व्यक्ति के साथ उसकी ससुराल गए। किसी धनी व्यक्ति के साथ रहने का यह पहला अवसर था, अतः वे अपने धनी मित्र की प्रत्येक गतिविधि को ध्यान से देखते–ताकते रहे।

वे दिन गरमी के थे। रात्रि में उक्त युवक के लिए शयन की व्यवस्था खुले स्थान पर की गई। पर्याप्त शीतलता बनी रहे, इसके लिए वहाँ चारों ओर जल छिड़का गया और रात्रि को ओढ़ने के लिए बहुत ही हल्की मखमली चादर दी गई। अन्य दोनों युवकों ने इतना ही जाना कि इस तरह का रहन–सहन बड़े बड़प्पन की बात है।

कुछ दिन बाद उन्हें भी अपनी–अपनी ससुराल जाने का अवसर मिला, पर वे दिन गरमी के न होकर सर्दी के थे। नकल तो नकल ही है। दोनों ने अपना बड़प्पन जताने के लिए बिस्तर खुले आकाश के नीचे बिछवाया, लोगों के लाख मना करने पर भी उन्होंने बिस्तर के आसपास पानी भी छिड़कवाया और ओढ़ने के लिए कुल एक–एक चादर वह भी हल्की ली।

रात में पाला पड़ा, दोनों को निमोनिया हो गया। चिकित्सा कराई गई, तब कठिनाई से जान बची।

इतनी कथा सुनाने के बाद गुरुजी ने शिष्य को बताया, "बेटा! उचित और अनुचित का विचार किए बिना जो दूसरों का अनुसरण करता है, वह मूर्ख ऐसे ही संकट में फँसता है, जैसे वे दोनों युवक।"

बोध कथा : अर्चना सोगानी

अपना अपना नजरिया

एक थे महात्मा। जगह–जगह भ्रमण किया करते और लोगों को ज्ञान के उपदेश दिया करते। लोगों की समस्याएं भी सुनते और उनका सही ढंग से समाधान भी किया करते।

ऐसे ही एक बार वे घूमते–घामते एक छोटे से गाँव में पहुँचे। लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। स्वागत के उपरांत गाँव के एक सज्जन ने उनसे कहा– 'स्वामीजी! मैं बड़ा परेशान हूँ, मैं लोगों के समक्ष जो भी सही बात कहता हूँ, वे उसे नहीं मानते? आखिर लोग मेरी बात को किस कारणवश सही नहीं मानते?'

यह सुनकर महात्मा ने कहा– चलो यह मान लेते हैं, तुम जो कहते हो वह ही सही होता है, लेकिन अब ये बताओ– हिमालय किस दिशा में हैं?

'उत्तर में'– उसने जवाब दिया।

इस पर महात्मा ने कहा– यदि यही प्रश्न किसी चीन देश के निवासी से पूछे तो उसका क्या जवाब होगा?

वह बोला– दक्षिण में।

इस तरह का जवाब सुनकर महात्मा ने कहा– लेकिन तुम तो कहते हो उत्तर में, भला फिर हिमालय दक्षिण में कैसे हो गया? तुम्हारी बात सही है तो उसकी बात भी कैसे सही हो गयी? कोई सही तर्क अब तुम ही बताओ?

वह व्यक्ति कुछ न बोला। चुपचाप खड़ा रहा।

तभी महात्मा ने मुस्कुराते हुए कहा– अब मेरी बात तुम जरा ध्यान से सुनो और समझो। हिमालय तुम्हारी अपेक्षा उत्तर दिशा में है। चीन के व्यक्ति की अपेक्षा दक्षिण में है। इसलिए तुम सही हो, वह भी सही है। यह अनेकान्त का दृष्टिकोण है। इससे हठ की स्थितियां टल जाती है। व्यर्थ के क्रोध की स्थितियों को टाला जा सकता है।

महात्मा की बात से वह व्यक्ति बड़ा प्रभावित हुआ और ज्ञान की एक नई बात ग्रहण कर अपने घर की ओर चल पड़ा।

पढ़ो और हँसो

मोहन : हमारे घर पर बहुत समय तक इस बात का झगड़ा चल रहा था कि हुक्म किसका चलेगा? फिर बाद में तय हुआ कि छोटे–मोटे मामले में पत्नी का हुक्म चलेगा और बड़े मामले मैं खुद निपटा लूँगा।

सोहन : तो अब घर पर व्यवस्था कैसी चल रही है?

मोहन : अभी तक तो कोई बड़ा मामला आया ही नहीं है।

♣ ♣ ♣

''क्या तुम्हें किसी ने सिखा–पढ़ाकर भेजा है?'' गवाही दे रहे एक बच्चे से वकील ने कड़ककर प्रश्न किया।

''हाँ।''

''हुजूर देखा, मैं तो पहले ही समझ गया था कि यह सिखा–पढ़ाकर भेजा गया गवाह है।'' वकील ने जज से कहा।

फिर बच्चे की ओर मुँह करके वकील बोला– तुम्हें किसने सिखा–पढ़ाकर भेजा है?

बच्चा बोला– मेरे पिताजी ने।

''क्या कहा था उन्होंने?''

''पिताजी ने कहा था कि विरोधी पक्ष का वकील तुम्हें तरह–तरह से परेशान करने की कोशिश करेगा, पर तुम सदैव सही बात ही बताना।''

– नित्या त्रिपाठी (देवनगर, कानपुर)

♣ ♣ ♣

माँ : बेटा, इन लड्डुओं को ऐसी जगह रख दो जहाँ चीटियां न पहुँच सके। थोड़ी देर बाद माँ ने पूछा– लड्डू कहाँ रख दिये?

बेटा : पेट में क्योंकि वहाँ चीटियां नहीं पहुँच सकती।

♣ ♣ ♣

यात्री : (कुली से) मुझे ऐसे डिब्बे में बैठाना जहाँ कोई आदमी न हो।

कुली : चलिए मैं आपको मालगाड़ी में बैठा देता हूँ।

– राहुल राय (आज़मगढ़)

♣ ♣ ♣

बेटा : (पापा से) पापा, वह जो गुलाब का पौधा लगाया है; उसमें अभी तक जड़ नहीं आया।

पापा : तुम्हें कैसे पता चला बेटा।

बेटा : क्योंकि मैं उसे रोज उखाड़कर देखता हूँ।

♣ ♣ ♣

संजय : (मदन से) तुम बात करते समय मुँह में चीनी क्यों रख लेते हो?

मदन : क्योंकि गुरुजी ने हमेशा मीठा बोलने के लिए कहा है।

♣ ♣ ♣

बालिका : दादी जी, राम किस रंग के थे?

दादी : सांवले।

बालिका : तो आप 'हरे राम', 'हरे राम' क्यों कहा करती है?

♣ ♣ ♣

सोहन : आज मेरे बारे में अखबार में खबर छपी है।

मोहन : क्या खबर है?

सोहन : छपा है कि भारत की आबादी सवा अरब से अधिक हो गई है। इसमें मैं भी शामिल हूँ।

♣ ♣ ♣

संटी पार्किंग में अपनी कार के पहिए निकाल रहा था।

बंटी : ओए ये क्या कर रहा है?

संटी : कार के दो पहिये निकाल रहा हूँ।

बंटी : लेकिन तू पहिये क्यों निकाल रहा है? ये तो देखने में ठीक लग रहे हैं।

संटी : देख नहीं रहा, यहाँ लिखा है, 'ओनली टू व्हीलर पार्किंग'।

– अनुज (बरौनी)

♣ ♣ ♣

एक राहगीर राह चलते अचानक चक्कर खाकर गिर पड़ा। उसे देख वहाँ भीड़ एकत्र हो गई।

एक ने कहा – पानी के छींटे मारो।

दूसरे ने कहा – अस्पताल ले जाओ।

तीसरे ने कहा– फौरन दूध–जलेबी खिलाओ।

इस बीच राहगीर बोला– सब अपनी–अपनी चला रहे हैं। कोई तीसरे आदमी की बात क्यों नहीं सुनता।

♣ ♣ ♣

बस कण्डक्टर : (यात्री से) कहाँ से बैठे हो, टिकट ले लिया?

यात्री : अभी बैठा कहाँ हूँ, खड़ा हूँ। जब बैठूंगा तब टिकट ले लूँगा।

– आलोक सक्सेना (दिल्ली)

♣ ♣ ♣

वर्ग पहेली के उत्तर

1 ए	डि	2 स	3 न	■	4 यू
शि	■	5 फ	र	6 व	री
7 या	8 सि	र	■	न्दे	■
■	द्धा	■	9 स	मा	10 स
11 प्रा	र्थ	12 ना	■	13 त	वा
ची	■	14 लं	गू	र	■
15 न	र्म	दा	■	16 म	ई

जन्म दिन मुबारक

भाविका (जयपुर)

समदिशा (जैतो मण्डी)

सुनिष्ठ (भिवानी)

सांझवी (मोरिण्डा)

नवरूप (कसौली)

समदिश (खन्ना)

अनुभव (बर्नपुर)

ईशाना (दिल्ली)

उदित (श्रीगंगानगर)

अनमोल (कुम्भीग्राम)

नवदिशा (दिल्ली)

अग्नेश (जियांग्सु, चीन)

रूहानियत (काशीपुर)

अभिनव (चीला)

महक (अमलोह)

कुणाल (पिंजोर)

अर्शदीप (गढ़दिवाला)

भाविशा (चीला)

अनिशा (उल्हासनगर)

खुशप्रीत (अमलोह)

हार्दिक (अलीगढ़)

स्वाति (भिवानी)

सुचेता (बिलासपुर)

सुहानी (रोपड़)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

चार बाल कविताएं : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

टमाटर

आलू, मूली, गोबी, शलजम और न मेथी, गाजर
किंतु रहूं हर तरकारी में, मैं हूँ लाल टमाटर
सूप बना लो, सॉस बना लो या सलाद में डालो
अगर तुम्हें तंदुरुस्त है रहना, पौध हमारी पालो

जलेबी

जीवन जैसी उलझी–उलझी, गुंजलदार अलेबी
ना मैं बर्फी, कलाकंद ही, मैं हूँ सखे जलेबी
उलझन में भी रसमय रहती, खाए दादू बेबी
सबको पोषण स्वाद जुटाती, मैं हूँ गरम जलेबी

रसगुल्ला

श्वेत–श्याम मैं शहर नगर हर, मिलता खुल्लम–खुल्ला
और नहीं मैं गोल–गलूटा, प्यारा हूँ रसगुल्ला
काम स्वीट डिश में आता हूँ, करूं न हल्ला गुल्ला
बिन मेरे आयोजन फीके, मैं हूँ बस रसगुल्ला

रसमलाई

एक अजूबी गम में डूबी, लगती डरी डरी सी
नहीं जलेबी, चाट–पकौड़ी, मैं तो रस भरी सी
सबको जब–तब तर कर देती, करती नित्य भलाई
बच्चे–बूढ़े फैन हैं मेरे, मैं हूँ रसमलाई

अप्रैल अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

अजय कुमार

आयु 15 वर्ष
हरी नगर,
उधमपुर (जम्मू–कश्मीर)

द्वितीय :

अक्षय कुमार

आयु 15 वर्ष
सेक्टर – 46बी, चण्डीगढ़

तृतीय :

अर्पिता सक्सेना

आयु 8 वर्ष
एम. 14, इन्कम टैक्स कालोनी,
टोंक रोड, जयपुर (राजस्थान)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

खुशी शाक्या
(महावीर नगर, भरथना),
अनुपमा कोहली (जयंती, अल्मोड़ा),
चित्रांशी वर्मा (बिजोली, बाडेसरा),
अंकिता प्रजापति (मलिकपुर, बखरा),
खुशी राणा (अगस्त्यमुनि),
अक्षित चौधरी (कसौटी),
शुबाशु साव (टीटागढ़, कलकत्ता),
हिमांशु (शिवाजी नगर, गुड़गांव),
भूमिका कुमारी (मोहाली),
निश्चय (विजय नगर, रुद्रप्रयाग),
तनिशा शर्मा
(पोस्टल कालोनी, कुरुक्षेत्र),
करुणा चुटानी (ज्योति पार्क, गुड़गांव),
समीक्षा मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर),
सिमरन कोहली (मराण्डा),
पलक वर्मा (सेक्टर 52, चण्डीगढ़),
निकिता पुंडीर (डांगोली),
विनोद (गुरुकुल कालोनी, पंचकुला),
सुहावनी (मोतिया खान, पहाड़गंज),
अभिनंदन (कश्मीरी मोहल्ला, अखनूर)।

जून अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 जून तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अगस्त अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मनोरंजक चित्र पहेलियां

■ चाँद मोहम्मद घोसी

1

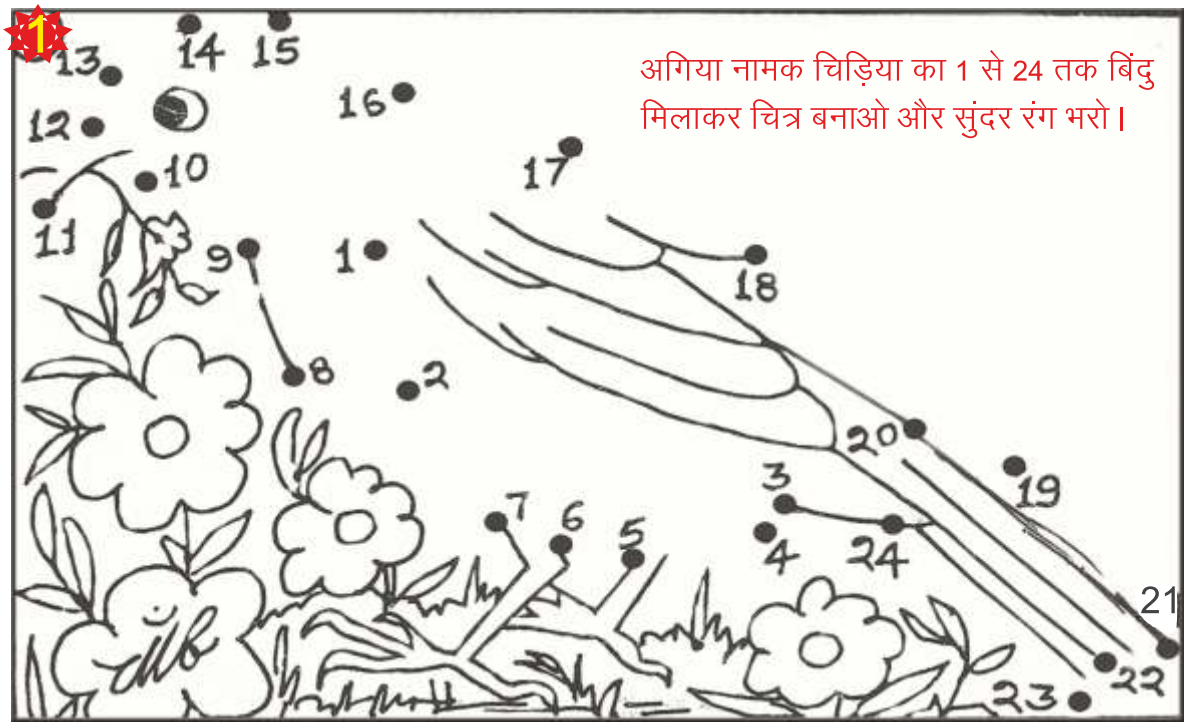

अगिया नामक चिड़िया का 1 से 24 तक बिंदु मिलाकर चित्र बनाओ और सुंदर रंग भरो।

2

भारत के इन चार महान पुरुषों के नाम बताते हुए बताइए **'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे,'** यह नारा किसका है?

उत्तर : अ शिवाजी , ब बाल गंगाधर तिलक, स महाराणा प्रताप, द अकबर, नारा बाल गंगाधर तिलक का है।

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF

music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

Affiliated to

Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony

Email: nvc@nirankarifoundation.org

Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)